



कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-

त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

I nL; rk : +91(11) 23005798

Qkx (dk) : +91(11) 23381428

QDI : +91(11) 23387887

पता : डॉ. मुकजी स्मृति न्यास, पी.पी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003

ई-मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकजी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी-36, एफ.एफ. कॉम्प्लेक्स, झण्डेवाला, नई दिल्ली-55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकजी स्मृति न्यास, पी.पी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक - प्रभात झा

विषय-सूची

21 जून : अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

जब राजपथ बना 'योगपथ' लगभग 36 हजार ने किया योगासन.....	7
विभिन्न राज्यों में सपन हुए योग कार्यक्रम.....	11
स्व से सार्वभौम की यात्रा है योग.....	13

संगठनात्मक गतिविधियां

15 लाख पार्टी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देगी भाजपा.....	15
बिहार विकास के लिए एनडीए को वोट दें.....	16
भाजपा राष्ट्रीय पदाधिकारियों की घोषणा.....	17
भाजपा महिला मोर्चा ने शुरू की 2800 किलोमीटर लंबी 'नारी सम्मान यात्रा'	17

सरकार की उपलब्धियां

भूटान, बांग्लादेश व नेपाल के साथ महत्वपूर्ण मोटर वाहन समझौता.....	18
खरीफ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि.....	19
'2022 तक सभी के लिए आवास' योजना को केंद्र सरकार की मंजूरी.....	20

वैचारिकी : डॉ. श्यामा प्रसाद मुकजी की जयंती 6 जुलाई पर विशेष भारतीय जनसंघ ही क्यों ?

डॉ. श्यामा प्रसाद मुकजी..... 21

श्रद्धांजलि

पांचजन्य के पूर्व संपादक यादवराव देशमुख नहीं रहे 23

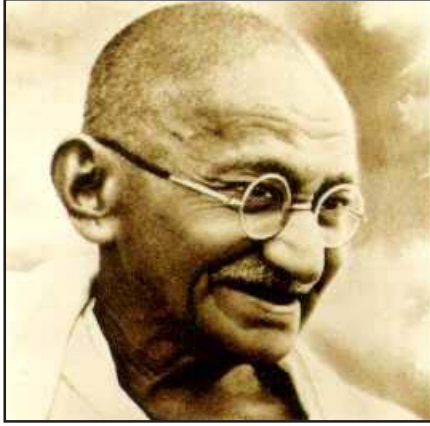
लेख

उभरती शक्ति की झलक	
- सुधांशु त्रिवेदी.....	25
बिहार की राजनीति और चुनाव की आहट	
- संजीव कुमार सिन्हा.....	27
बेहतर होती अर्थव्यवस्था	
- राम नयन सिंह.....	29



कमल संदेश
के सभी सुधी
पाठकों को
पद्मिनी
एकादशी
की हार्दिक
शुभकामनाएं!

निष्काम कर्म की सीख



गांधी जी उन दिनों सेवाग्राम आश्रम में रह रहे थे। दूर-दूर से लोग उनसे मिलने आते और अपने मन की बात उनके सामने रखकर उनसे उसका समाधान ले जाते। एक बार गांधी जी का एक परिचित धनी व्यक्ति उनसे मिलने पहुंचा। उसने दुखी मन से कहा, 'महात्मा जी, आज समय बेईमानों का ही रह गया है। आप तो जानते ही हैं कि मैंने अमुक नगर में कितने प्रयत्नों के बाद लाखों रुपये खर्च कर धर्मशाला का निर्माण कराया था। अब कुछ गुटबाजों ने मुझे प्रबंध समिति से ही हटा दिया है। आप देखिए, इन दिनों ऐसे लोग समिति में आ गए हैं जिनका धन की दृष्टि से तो योगदान नगण्य ही है। मुझे तो समझ ही नहीं आ रहा है कि मैं करूं तो क्या करूं?'

इस संबंध में क्या न्यायालय में मामला दर्ज कराना उचित नहीं होगा?'

उसकी बात सुनकर गांधी जी ने कहा, 'तुमने धर्मशाला धर्मार्थ बनवाई थी या उसे व्यक्तिगत संपत्ति बनाए रखने के लोभ में ऐसा किया था? देखो, असली धार्मिक कर्म तो वह होता है, जो बिना लोभ-लाभ की इच्छा के किया गया हो। लेकिन मुझे लगता है कि तुम अभी तक नाम और प्रसिद्धि का लालच नहीं त्याग पाए हो। इसलिए तुम धर्मशाला में प्रबंध समिति के पद से हटाए जाने से दुखी हो। मेरी बात मानो तो अब तुम धर्मशाला की प्रबंध समिति में पद और नाम की प्रसिद्धि के मोह को त्याग दो। इससे तुम्हारे मन को अपार शांति प्राप्त हो सकेगी। मनुष्य को जीवन में सदा निष्काम कर्म की ओर बढ़ना चाहिए।'

गांधी जी की बात सुनकर उस व्यक्ति ने संकल्प लिया कि वह भविष्य में किसी भी पद अथवा नाम के लालच में नहीं पड़ेगा।

संकलन: राधा नाचीज
(नवभारत टाइम्स से साभार)

पाथेय

राष्ट्र मंदिर

जिस राष्ट्र मंदिर का निर्माण इतने दिनों से अनेक आत्म-विजयी ऋषि-मुनि, दिग्विजयी सम्राट, कवि, कलाकार, साहित्यकार, स्मृतिकार, पुराणों के रचयिता तथा धर्मशास्त्रों के प्रणेता करते चले आ रहे हैं, आज उस मंदिर में राष्ट्र-पुरुष की मूर्ति स्थापित करके उसे आमंत्रित करना है। भगवान को धन्यवाद दें कि यह सौभाग्य हमको प्राप्त हुआ है। हम इस मंदिर के प्रथम पुजारी बनें। ऐसा प्रबंध कर चलें कि पीछे आने वाली पीढ़ियां इस मंदिर में अनंत काल तक पूजा कर सकें।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय



विश्व ने खुले दिल से स्वागत किया योग दिवस का

21 जून 2015 को एक इतिहास रचा गया। पूरे विश्व में बड़ी संख्या में लोग एक ऐसे अवसर को मनाने के लिए जुटे जिसका मानवता के लिए गहरा अर्थ है। इस दिन लोग संयुक्त राष्ट्र के उस निर्णय के स्वागत के लिए जुटे जिसमें 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया गया है। 21 जून 2015 को इस घोषणा का पहला वर्ष था और इसका स्वागत पूरे विश्व में भरपूर उत्साह के साथ हुआ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं नई दिल्ली के राजपथ पर आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित हुए, जबकि भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह, केंद्रीय मंत्रीगण, मुख्यमंत्री, अनेक विशिष्ट व्यक्तियों एवं योग प्रशंसकों के साथ इस ऐतिहासिक दिवस को मनाने के लिए विभिन्न स्थानों पर एकत्रित हुए।

दिसंबर 2014 में 177 देशों के सहयोग से प्रस्ताव पारित हुआ और 21 जून अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित हुआ। यह मुख्यतः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों का परिणाम था कि यह प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र में लाया गया और इतने बड़े समर्थन से पारित हुआ। 69वें संयुक्त राष्ट्र के सत्र को 27 दिसंबर 2014 को संबोधित करते हुए भारत के अनूठे दर्शन को जो प्रकृति के साथ सामंजस्यता पर जोर देता है, पर बल दिया। अपार अवसर एवं समृद्धि की जबरदस्त संभावना वाले देश के रूप में भारत को प्रस्तुत करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत ने न्याय एवं स्वाभिमान को अपना आधारभूत मूल्य माना है। साथ ही उन्होंने कहा है कि संयुक्त राष्ट्र को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के संबंध में विचार करना चाहिए। उनके इस अपील का विश्व समुदाय ने तत्काल स्वागत किया और योग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसका समुचित स्थान प्राप्त हुआ।

यह एक विडम्बना है कि जबकि पूरे विश्व ने खुले दिल से योग का स्वागत किया है हमारे देश में कुछ ऐसे विभाजनकारी तत्व हैं जो राष्ट्रहित के हर विषय पर देश की जनता को गुमराह करना अपना धर्म समझते हैं। एक ओर जहां योग का अर्थ 'जोड़ना' है वहीं कुछ लोग इसके नाम पर समाज को 'तोड़ना' चाहते हैं। पूरे देश एवं विश्व के हर भाग में बड़ी संख्या में इस अवसर को मनाकर ऐसे तत्वों को लोगों ने करारा जवाब दिया है। योग पूरे विश्व में हर समुदाय में लोकप्रिय इसलिए हुआ है क्योंकि इसमें शारीरिक एवं आध्यात्मिक सहित संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए अपार संभावनाएँ हैं। योग दिवस की केवल इसलिए आलोचना करना क्योंकि इसका उद्भव भारत में हुआ और भारतीय सभ्यता में इसकी जड़ें हैं, पूरी तरह से निंदनीय है। विश्व भर में लोगों ने देख लिया है कि वे ऐसी संकीर्णताओं से उपर उठकर हर उस चीज का स्वागत कर सकते हैं जो मानवता के लिए एक वरदान है।

प्राचीन काल से ही अपनी विशिष्ट ज्ञान परंपरा के द्वारा भारत मानवता की उन्नति के लिए व्यापक योगदान करता रहा है और लगभग हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है। इसकी अनेक उपलब्धियों से विश्व अब भी अचंभित है तथा आज के बड़े-बड़े विद्वान अभी भी इन उपलब्धियों से प्रेरणा लेते हैं। इसकी ज्ञान गंगा में मौजूद बहुत से मोती अब भी चमक रहे हैं और उनके

सम्पादकीय

उपर लिपटे रहस्य के आवरण आज के वैज्ञानिकों को चुनौतियां देती हैं। भारत आज भी उनके प्राचीन विचारों से प्रेरणा लेता है तथा आज की युवा पीढ़ी के लिए हमारे ऋषि महर्षि मार्गदर्शक बने हुए हैं। भारत की सभ्यतागत ज्ञान परंपरा को पूरी तरह ना समझा जा सका है न ही इसकी संपूर्णता की खोज ही हो पाई है। यह गूढ़ है, विराट है और सीमाओं की बंधनों से परे है। उस विशाल ज्ञान संपदा में से योग एक ऐसा रत्न है जिसे भारत ने समस्त मानव समाज को भेंट किया है। इसमें विज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिकता भी है। आज यही विश्व को आवश्यकता भी है। यह अब मानवता के सामने आगे बढ़ने का एक मार्ग है-वह मानव समाज जो बैचेन है, तनावग्रस्त है और वह भी ऐसे समय में जब उग्रता और अतिरंजना मानवता का गला घोट देना चाहती हैं। योग उन्हें समाधान दे सकता है, उन्हें शांत कर उनके खोखलेपन को अपनी आंतरिक आध्यात्मिकता से सराबोर कर सकता है। विश्व यह समझ चुका है इसलिए योग हर ओर लोगों के हृदय पर राज कर रहा है। प्रधानमंत्री ने ठीक ही कहा है कि योग हिंसा, तृष्णा और स्वास्थ्य पर बढ़ते खर्च को थाम सकता है। अशांत मन को आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत कर अच्छा स्वास्थ्य और निश्चल मन यह योग से संभव है। आइए, योग को अपनाएं, इसका स्वागत करें। अब इस नए युग का सूत्रपात हो चुका है।■

देश के कण-कण पर श्रीआनंदपुर साहिब का कर्ज है : अमित शाह

✍ संवाददाता द्वारा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह 19 जून को श्री आनंदपुर साहिब की स्थापना के 350 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य पर आयोजित समारोह में शामिल हुये।



इस पवित्र कार्यक्रम में बोलते हुए उन्होंने श्री आनंदपुर साहिब की महत्ता पर प्रकाश डाला और श्री गुरु गोविन्द साहिब जी और उनके पूरे परिवार के देश हित में दिये गये शहादत को नमन किया।

उन्होंने इस पावन अवसर पर बोलते हुये कहा कि देश के कण-कण पर श्री आनंदपुर साहिब का कर्ज है। श्री आनंदपुर साहिब ने शहादत और बलिदान की उज्ज्वल परंपरा की जो नींव रखी है वह हमेशा से वंदनीय है। उनका त्याग और उनकी शहादत हम सभी में एक नयी ऊर्जा, एक नयी चेतना और एक नयी प्रेरणा का हमेशा संचार करती रहती है।

श्री अमित शाह जी ने अपने उद्बोधन

में श्री आनंदपुर साहिब को पूरे देश में ज्ञान, चेतना और अध्यात्म का स्रोत बताया।

उन्होंने उन पवित्र शास्त्रों के भी दर्शन किये जिससे श्री गुरु गोविन्द सिंह

जी ने स्वतंत्रता संग्राम में अन्याय का अत्यंत साहसपूर्वक सामना किया था।

उन्होंने पूरी पार्टी और पार्टी के कार्यकर्ताओं की तरफ से श्री आनंदपुर साहिब में हाजिरी कुबूल

करने की गुजारिश की।

उन्होंने कहा कि इस पवित्र स्थल से उन्हें यहाँ एक अदम्य साहस और चेतना की अनुभूति हुई है और वह यहाँ से एक अलौकिक ऊर्जा प्राप्त कर जा रहे हैं।

इस पवित्र अवसर पर भारत सरकार के माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह, पंजाब के मुख्यमंत्री श्री प्रकाश सिंह बादल, उप-मुख्यमंत्री श्री सुखबीर सिंह बादल, हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर, छत्तीसगढ़ के राज्यपाल माननीय श्री बलराम दास टंडन, केंद्रीय मंत्री श्रीमती हरसिमरत कौर और पंजाब भाजपा के अध्यक्ष श्री कमल शर्मा भी मौजूद थे। ■

21 जून : अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

जब राजपथ बना 'योगपथ' लगभग 36 हजार ने किया योगासन



'योग' विश्व को भारत द्वारा दी गई एक अनुपम भेंट है। योग शरीर, मन को संतुलित करने का माध्यम और मानवता, प्रेम, शांति, एकता, सद्भाव के भाव को जीवन में उतारने का कार्यक्रम है। योग से समस्त विश्व में शांति संभव है और योग अपनाकर प्रकृति और मानव में बीच बिगड़ते संतुलन को ठीक किया जा सकता है। योग की इस अपार शक्ति को देखते हुए 21 जून को दिल्ली स्थित राजपथ पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का शानदार कार्यक्रम किया गया। इसमें लगभग 36 हजार लोगों ने योगाभ्यास किया और विभिन्न देशों के लोगों ने भी इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राजपथ पर हुए योगाभ्यास में हिस्सा लिया और योग के महत्व को रेखांकित किया। साथ ही देश के विभिन्न हिस्सों में केंद्र सरकार के केंद्रीय मंत्रियों समेत अनेक लोगों ने योग कार्यक्रम में भागीदारी की।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 21 जून को संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिल्ली स्थित राजपथ पर लगभग 36 हजार योगाभ्यासियों के साथ योग कार्यक्रम में हिस्सा लिया। श्री मोदी ने राजपथ पर अपने भाषण में इस दिन को मानव मन को शांति और सौहार्द का प्रशिक्षण देने के युग की शुरुआत बताया। श्री मोदी ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के शुभारंभ के प्रतीक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि योग न केवल शरीर को लचीला बनाने की कसरत है, बल्कि यह आंतरिक विकास का मार्ग भी है। प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर

देश-दुनिया के लोगों को शुभकामनाएं देते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि योग शरीर, मन को संतुलित करने का माध्यम और मानवता, प्रेम, शांति, एकता, सद्भाव के भाव को जीवन में उतारने का कार्यक्रम है। प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करने के लिए इस विश्व संगठन का धन्यवाद किया। उन्होंने इससे संबंधित प्रस्ताव के सह प्रस्तावक देशों और इस दिवस को मनाने वाले देशों को भी धन्यवाद दिया। यहां राजपथ पर योग कार्यक्रम की शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इस कार्यक्रम का

उद्देश्य मानव कल्याण और दुनिया को तनाव मुक्त बनाने के साथ दुनिया भर में सद्भावना का संदेश पहुंचाना है।

श्री मोदी ने कहा कि ज्यादातर लोग योग को अंग मर्दन का माध्यम मानते हैं। मैं मानता हूँ कि यह सबसे बड़ी गलती है। अगर योग अंग-उपांग मर्दन का कार्यक्रम होता तब सर्कस में काम करने वाले बच्चे योगी कहलाते। शरीर को केवल मोड़ देना या अधिक से अधिक लचीला बनाना ही योग नहीं है। प्रधानमंत्री ने उम्मीद जतायी कि देश में योग के पक्ष में माहौल बनेगा और यह भविष्य में भी जारी रहेगा। श्री मोदी ने कहा कि हम केवल इसे एक दिवस

के रूप में नहीं मना रहे हैं बल्कि हम मानव के मन की शांति के नये युग की ओर उन्मुख बना रहे हैं। यह कार्यक्रम मानव कल्याण का है और शरीर, मन को संतुलित करने का माध्यम और मानवता, प्रेम, शांति, एकता, सद्भाव के भाव को जीवन में उतारने का कार्यक्रम है।

प्रधानमंत्री ने कहा, मेरे लिये यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है कि यह (योग) किस भूमि पर पैदा हुआ, किस भाग में इसका प्रसार हुआ। महत्व इस बात का है कि मानव का आंतरिक विकास होना चाहिए। हम इसे केवल एक दिवस के रूप में नहीं मना रहे हैं बल्कि हम मानव मन को शांति एवं सद्भवना के नये युग की शुरुआत के लिए प्रशिक्षित कर

कि हम सबके साथ अंतर्मन को कैसे ताकतवर बनाएं और मनुष्य ताकतवर बनकर कैसे शांति का मार्ग प्रशस्त करे। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से संगीत के जलसे से पहले कोई तबला ठीक करता है, कोई ढोल ठीक करता है, कोई सितार देखता है। संगीत कार्यक्रम शुरू होने से पहले ताल को मिलाकर देखा जाता है। उसी प्रकार से आसन का भी पूरी योग व्यवस्था में उसी प्रकार का महत्व है। इसलिए इसको जानना पहचानना जरूरी है।

उल्लेखनीय है कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर राजपथ पर 35,985 लोगों ने योग किया और इसमें 84 देशों के प्रतिनिधि मौजूद थे जिससे यह कार्यक्रम 'गिनीज

वर्ल्ड रिकार्ड्स बुक' में दर्ज हो गया। आयुष मंत्री श्री श्रीपद नाइक ने कहा कि यह भारत के लिए गर्व की बात है कि हमने एक दिन में दो कीर्तिमान स्थापित किये। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कीर्तिमान स्थापित करने और कार्यक्रम के सफल आयोजन पर सभी को बधाई दी है। राजपथ के समारोह ने 19 नवंबर 2005 का पिछला रिकार्ड तोड़ दिया जब जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर के विवेकानंद केन्द्र के नेतृत्व में 362

राष्ट्रपति ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने के लिए सामूहिक योग कार्यक्रम का उद्घाटन किया

राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने के लिए राष्ट्रपति भवन में सामूहिक योग कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर सभी को शुभकामनाएं दीं।



रहे हैं। श्री मोदी ने कहा कि दुनिया ने विकास की नई ऊंचाइयों को हासिल किया है। प्रौद्योगिकी एक प्रकार से जीवन के हर क्षेत्र में प्रवेश कर गया है। बाकी सब चीजें तेज गति से बढ़ रही हैं। दुनिया में हर प्रकार की क्रांति हो रही है। लेकिन कहीं ऐसा न हो कि इंसान वहीं का वहीं बना रह जाए और विकास की अन्य सभी व्यवस्थाएं आगे बढ़ जाएं। प्रधानमंत्री ने कहा कि अगर इंसान वहीं का वहीं बना रह जाएगा और विकास की अन्य व्यवस्थाएं आगे बढ़ जायेंगी तब एक मिसमैच (असंतुलन) हो जायेगा। इसलिए मानव का भी आंतरिक विकास होना चाहिए। विश्व के पास इसके लिए योग ऐसी ही एक विद्या है। उन्होंने कहा कि योग को आगे बढ़ाने में अनेक रंग रूप और भूभाग के लोगों ने योगदान दिया है।

श्री मोदी ने कहा कि योग का महत्व इस संदर्भ में है

स्कूलों के 29973 छात्रों ने 18 मिनट तक सूर्य नमस्कार के लिए कई योग क्रियाएं की थीं। गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड्स के कीर्तिमान सत्यापन मामलों के वैश्विक प्रमुख मार्को सरिगाटी ने कहा कि 'एनस्ट एंड यंग' ने पूरे कार्यक्रम में शामिल लोगों की संख्या की जांच की। उन्होंने कहा कि पहली बार रिकार्ड बुक्स में जगह बनाने के लिए किसी योग कार्यक्रम के लिए न्यूनतम मानदंड कम से कम 50 देशों के लोगों का शामिल होना तय हुआ। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, प्रधानमंत्री को राजपथ पर उपस्थित लोगों को केवल संबोधित करना था और योग में हिस्सा नहीं लेना था। लेकिन सबको आश्चर्यचकित करते हुए उन्होंने योग करने आए हजारों बच्चों सहित करीब 36 हजार लोगों के साथ बैठकर विभिन्न योगासन भी किये।

प्रधानमंत्री ने कहा कि यह कार्यक्रम का मकसद सिर्फ और सिर्फ मानवता का कल्याण और सद्भावना एवं तनाव

से मुक्ति के संदेश का प्रसार है। प्रधानमंत्री ने इस प्राचीन परंपरा को आगे बढ़ाने में ऋषियों, मुनियों, योग गुरुओं, योग शिक्षकों, योग अभ्यासी लोगों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि पहली बार दुनिया को यह स्वीकार करना होगा कि योग अभ्यास का सूरज ढलता नहीं है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि इस अवसर पर हम संयुक्त राष्ट्र का धन्यवाद करते हैं, उन 177 देशों का आभार व्यक्त करते हैं जो 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित करने के प्रस्ताव के सह प्रस्तावक बने और इसे मनाने के लिए दुनिया के 193 देशों को भी धन्यवाद देते हैं। श्री मोदी ने कहा कि दुनिया के कुछ हिस्सों में सूरज की पहली किरण का योग अभ्यासी लोग पहले ही स्वागत कर चुके हैं। 24 घंटे के बाद सूरज की किरण समाप्त होने तक सभी क्षेत्रों में योग अभ्यासी लोग इसका स्वागत कर रहे होंगे। पहली बार दुनिया इसे स्वीकार कर रही है। योगासन के लिए राजपथ पर भारी संख्या में लोगों के उपस्थित होने पर प्रधानमंत्री ने हर्ष जताते हुए कहा, क्या किसी ने कल्पना की होगी कि राजपथ, योगपथ बन जाएगा।

राजपथ पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित वृहद कार्यक्रम शुरू होने से पहले प्रधानमंत्री ने ट्विट किया, प्रथम अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर पूरी दुनिया के लोगों को शुभकामनाएं। श्री मोदी ने ट्विट किया, 'हम योग को अपने दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने का संकल्प लें।' एक अन्य ट्विट में प्रधानमंत्री ने कहा कि दुनिया के कुछ हिस्सों में सूरज की पहली किरण का योग अभ्यासी लोग पहले ही स्वागत कर चुके हैं। यह दुनिया भर में जारी रहेगा। श्री मोदी ने कहा कि मैं राजपथ पर थोड़ी ही देर में योग दिवस पर कार्यक्रम में शामिल होऊंगा। इस वृहद समारोह में काफी संख्या में विदेशी मिशनों के राजनयिकों ने भी हिस्सा लिया। दिल्ली के उपराज्यपाल श्री नजीब जंग, मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल ने भी आसन किये। प्रधानमंत्री के साथ मंच पर योगगुरु श्री रामदेव समेत कुछ अन्य योग एवं अन्य धार्मिक संस्थाओं के प्रमुख भी मौजूद थे।

दिल्ली के अलावा देश के विभिन्न हिस्सों में भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किये गए। भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने पटना (बिहार) में योग कार्यक्रम का शुभारंभ किया। वरिष्ठ भाजपा नेता श्री आडवाणी ने रुक-रुक कर हो रही रिमझिम फुहारों के बावजूद पालमपुर शहर में योग शिविर में शिरकत की। केंद्रीय गृह

मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने लखनऊ में, मानव संसाधन मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी ने हिमाचल प्रदेश में, वित्त और रक्षा मंत्री श्री अरुण जेटली ने वाशिंगटन में, विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा ने स्वराज न्यूयॉर्क में, परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी ने नागपुर में, संसदीय कार्य मंत्री श्री वैकैया नायडू ने चेन्नई में, ऊर्जा मंत्री श्री पियूष गोयल ने मुंबई में, संचार मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद ने कोलकाता में, स्वास्थ्य मंत्री श्री जे पी नड्डा ने हैदराबाद में, श्री जीतेन्द्र सिंह ने जम्मू कश्मीर में, श्री मुख्तार अब्बास नकवी ने फरीदाबाद में तथा कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने पटना में योग शिविरों में योगाभ्यास किया।

संगठन महामंत्री श्री रामलाल एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रभात झा ने राजपथ पर प्रधानमंत्री के साथ योगाभ्यास किया। पार्टी उपाध्यक्ष श्री अविनाश राय खन्ना ने पंजाब के गुरदासपुर में योगाभ्यास किया। पार्टी महासचिव श्री राम माधव ने राजपथ पर, श्री मुरलीधर राव ने हैदराबाद में, श्री भूपेंद्र यादव ने पटना में, श्री कैलाश विजयवर्गीय ने मध्य प्रदेश में तथा श्री अनिल जैन ने न्यूयॉर्क में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर योगाभ्यास किया। भारतीय जनता पार्टी के सभी पदाधिकारियों, केंद्रीय मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों और कार्यकर्ताओं ने देश भर में अलग-अलग जगहों पर योग दिवस के मौके पर आयोजित कार्यक्रमों में भाग लिया और योगाभ्यास किया।

सशस्त्र बल भी इस समारोह का हिस्सा बने। दुनिया के सबसे उंचे युद्ध के मैदान सियाचिन में जवानों ने योग आसन किया। वहीं युद्धपोतों पर भी योग कार्यक्रम का आयोजन हुआ। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र में योग दिवस समारोह में हिस्सा लिया। विदेशों में भारतीय मिशन ने इस संबंध में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर अपने स्वागत संबोधन में आयुष मंत्री श्रीपद नाईक ने कहा कि दुनिया बड़े पैमाने पर योग को अंगीकार कर रही है।

उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र ने पिछले वर्ष दिसंबर में 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया था और 177 देश इसके सह प्रस्तावक बने। यह प्रस्ताव प्रधानमंत्री ने पिछले वर्ष सितंबर में संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने पहले संबोधन के दौरान रखा था। राजपथ पर इस कार्यक्रम का संयोजन आयुष मंत्रालय ने किया। सरकार ने इस कार्यक्रम के लिए 2000 बड़े डिजिटल कैमरे लगाये और इसका सीधा प्रसारण भी किया गया। इस समारोह में मुस्लिम समाज के लोगों ने भी हिस्सा लिया जिनमें से कई अपनी पारंपरिक टोपी

पहन कर आए थे।

प्रथम योग दिवस पर पूरे विश्व में लोगों ने किया योग

प्रथम योग दिवस के मौके पर पूरे विश्व में हजारों योग उत्साहियों ने 21 जून को इस प्राचीन भारतीय आध्यात्मिक पद्धति को आत्मसात करते हुए योग के विभिन्न आसन किए। पूरे ऑस्ट्रेलिया में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में एक हजार से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री टोनी एबोट ने वैश्विक योग अपील की प्रशंसा की। एबोट ने कहा कि हजारों वर्षों से योग ने मस्तिष्क, शरीर और आत्मा को संतुलित करने में अपने अनुयायियों का मार्गदर्शन किया है। उन्होंने कहा कि योग के प्रति विश्व में बढ़ती लोकप्रियता और जीवन के सभी क्षेत्र के लोगों की अपील बेहतर स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की उसकी क्षमता का प्रदर्शन करती है।

मेलबर्न में 500 से अधिक लोग स्पिंगर्स लेजर सेंटर में एकत्रित हुए और दिन की शुरूआत सूर्य नमस्कार तथा योग की विभिन्न जटिल मुद्राएं करके की। विक्टोरिया के स्पीकर टेलमो लैंगगुइलर, इंगा पइउलिक, एंथोनी बायरन सहित कई सांसदों ने मेलबर्न में आयोजित समारोह में भारतीय महावाणिज्यदूत मनिका जैन की मौजूदगी में द्वीप प्रज्वलित करके हिस्सा लिया। योग कार्यक्रम सिडनी के लोकप्रिय बॉडी समुद्र तट और ऑस्ट्रेलियाई राजधानी कैनबरा में भी आयोजित हुए।

ब्रिटेन में योग दिवस मनाने के लिए सैकड़ों लोग विभिन्न शहरों में एकत्रित हुए। मुख्य कार्यक्रम लंदन में टेम्स नदी के किनारे आयोजित हुआ। यह कार्यक्रम टेम्स के साउथ बैंक स्थित बर्नी स्पेन गार्डन में आयोजित हुआ। ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरन ने अपने संदेश में कहा कि ब्रिटेन अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का समर्थन करके प्रसन्नता महसूस कर रहा है। हम उन 177 देशों में से एक हैं जिन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के प्रस्ताव के समर्थन में वोट किया था। जिस उत्साह से इसे ब्रिटेन और पूरे विश्व में अपनाया जा रहा है उसे देखकर हम बहुत खुश हैं। चीन में कार्यक्रम प्रतिष्ठित पीकिंग विश्वविद्यालय और गीली विश्वविद्यालय में आयोजित हुए। इसमें जीवन के विभिन्न क्षेत्र के लोगों ने हिस्सा लिया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस से एक सप्ताह पहले कुनमिंग में युन्नान मिंज विश्वविद्यालय में भारत-चीन योग कालेज का उद्घाटन किया गया। यह देश में ऐसा पहला कॉलेज था।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री बान की मून ने न्यूयार्क में

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के साथ अपनी मुलाकात के दौरान प्रथम अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर अपना उत्साह व्यक्त किया और कहा कि इस दिन पूरे विश्व में अभूतपूर्व जोश देखने को मिला है। नेपाल में भारी वर्षा के बावजूद अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया जिसमें 800 से अधिक उत्साहियों ने योग सत्र हिस्सा लिया। इसमें बॉलीवुड अभिनेत्री श्रीमती मनीषा कोइराला भी शामिल थीं। कार्यक्रम का आयोजन भारतीय दूतावास की ओर से किया गया। इसमें नेपाल के उप-राष्ट्रपति श्री परमानंद झा भी मौजूद थे। दूतावास परिसर में आयोजित योग सत्र में 800 से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया।

इस मौके पर काठमांडो में भारतीय दूतावास की ओर से प्रकाशित योग संदेश का श्री झा और नेपाल में भारत के राजदूत श्री रंजीत राय ने विमोचन किया। कार्यक्रम के दौरान आधे

राजपथ पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह ने दो गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड बनाये

दिल्ली स्थित राजपथ पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के दौरान हुए कार्यक्रम को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में शामिल कर लिया गया है। दुनिया में पहली बार इतने बड़े तादाद में लोगों ने एक साथ योग किया। राजपथ पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह ने दो गिनीज विश्व रिकार्ड बनाये। सबसे ज्यादा 35,985 लोगों और 84 देशों ने इसमें भागीदारी की। गौरतलब है कि कार्यक्रम सुबह सात बजे से सात बजकर 35 मिनट तक चला। चार योग विशेषज्ञों ने लोगों को योग आसान सिखाए।

घंटे योग आसन, प्राणायाम और पांच मिनट का ध्यान किया गया। सिंगापुर में 50 से अधिक केंद्रों पर आयोजित दो घंटे के कार्यक्रम में चार हजार से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का नेतृत्व भारतीय उच्चायुक्त श्री विजय ठाकुर सिंह और सिंगापुर के प्रधानमंत्री कार्यालय में मंत्री श्री ग्रेस फू ने किया।

श्री सिंह ने कहा कि सिंगापुर में प्रथम अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम पर जबर्दस्त प्रतिक्रिया देखने को मिली। इसमें राजनयिक वर्ग के लोगों, व्यापार जगत के लोगों और जीवन के सभी क्षेत्र के सिंगापुरी लोगों ने हिस्सा लिया। थाईलैंड में बैंकॉक विश्वविद्यालय के एक खुले मैदान को एक योग स्टूडियो में तब्दील कर दिया गया था। इस कार्यक्रम में हजारों थाई लोगों, भारतीयों और अन्य प्रवासियों

ने हिस्सा लिया। भारतीय उच्चायोग की ओर से चुलालोंगकोर्न विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में 7400 से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। भारत से आये योग विशेषज्ञों ने एक प्रदर्शन किया जिसके बाद सभी प्रतिभागियों के लिए 33 मिनट का समान योग प्रोटोकॉल आयोजित किया गया। इसी तरह के कार्यक्रमों का आयोजन चियांगमई, फुकेट और पटया में भी किया गया।

विभिन्न राज्यों में सपन्न हुए योग कार्यक्रम

बिहार

केन्द्रीय कृषि मंत्री ने सामूहिक योग प्रदर्शन कार्यक्रम को संबोधित किया

केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह ने 21 जून का मोतीहारी, बिहार में सामूहिक योग प्रदर्शन कार्यक्रम को संबोधित किया। पहले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर श्री सिंह ने कहा कि योग दुनिया को भारत का तोहफा है। श्री सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 27 दिसंबर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र की महासभा में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा था जिसका समर्थन विश्व ने किया। श्री सिंह ने कहा कि योग जीवन को जोड़ता है। योग मन, बुद्धि, शरीर और आत्मा को जोड़ने की तकनीक है। श्री सिंह ने लोगों से उनके जीवन में योग अपनाने का आग्रह किया।

लखनऊ

योग भारत की तरफ से दुनिया को दिया गया सबसे बड़ा उपहार : राजनाथ सिंह

केंद्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने योग को भारत की तरफ से विश्व को दिया गया सबसे बड़ा उपहार बताते हुए कहा है कि इसे किसी जाति, धर्म अथवा मजहब की सीमाओं में बांधकर नहीं देखा जाना चाहिए। श्री सिंह ने पहले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर लखनऊ में विशाल केडी सिंह स्टेडियम में आयोजित सामूहिक योग सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि आज भारत में ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया में योग और आयुर्वेद का अभ्यास किया जा रहा है, जो हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड समेत कई मुस्लिम संगठनों के विरोध के बावजूद केडी सिंह बाबू

स्टेडियम में योगाभ्यास के लिए जुटे लगभग 15 हजार लोगों में बड़ी संख्या में मुसलमान भी शामिल थे। उत्तर प्रदेश सरकार ने आधिकारिक रूप से तो योग दिवस के कार्यक्रम नहीं करते



हुए इसे लोगों की स्वेच्छा पर छोड़ दिया था, इसके बावजूद योग सत्र में राज्य सरकार के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अच्छी खासी उपस्थिति देखी गई। योग सत्र में सूर्य नमस्कार आसन का अभ्यास नहीं किया गया, पर कई योग क्रियाओं में 'ओम' का उच्चारण किया गया। श्री सिंह ने कहा कि दुनिया में या तो बौद्ध धर्म का सर्वाधिक प्रचार हुआ है या फिर योग का, जिसे दुनिया के 191 देशों ने स्वीकार किया है। गृह मंत्री ने लगभग एक घंटे तक चले योग अभ्यास शिविर में स्वयं भाग लिया और आसन एवं योग की विभिन्न क्रियाओं का अभ्यास किया।

फरीदाबाद

श्री मुख्तार अब्बास नकवी ने फरीदाबाद में पहले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में भाग लिया। केन्द्रीय संसदीय एवं अल्पसंख्यक मामलों के राज्य मंत्री श्री मुख्तार अब्बास नकवी ने फरीदाबाद में हजारों लोगों के साथ पहले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में भाग लेते हुए कहा कि योग अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी है, अच्छा स्वास्थ्य व्यक्ति का सबसे बड़ा धन है। श्री नकवी ने कहा कि योग शरीर तथा मस्तिष्क दोनों को ऊर्जा प्रदान करता है। यह जीवन शैली में संतुलन को बरकरार रखने में मदद करता है। योग व्यक्ति विशेष का और सार्वभौमिकता का मिलन है। योग का उद्देश्य परस्पर विरोधी आवेगों के संघर्ष को शांत करना है। आज पूरा विश्व योग दिवस मना रहा है,

जो भारत के लिए गौरव का क्षण है।

श्री नकवी ने कहा कि धर्म के साथ योग को जोड़ना गलत है, क्योंकि योग पूरी तरह स्वास्थ्य, मस्तिष्क और आत्मा से जुड़ा है। श्री नकवी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्रयासों के साथ 177 देशों ने संयुक्त राष्ट्र संघ में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करने के प्रस्ताव का सह-प्रायोजन किया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने यह भी माना कि योग सभी मानवों के लिए लाभदायक है। यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री बान की मून ने भी कहा कि योग किसी से भेदभाव नहीं करता है और सभी लोग योग कर सकते हैं।

गुवाहाटी

योग बनाता है स्वस्थ मन, स्वस्थ शरीर : सर्बानन्द सोनोवाल

पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को गुवाहाटी में एक शांत लेकिन रंगारंग तरीके से आयोजित किया गया। इसे नेहरू युवा केन्द्र संगठन (एनवाईकेएस), राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) और भारतीय खेल प्राधिकरण (एसएआई) ने संयुक्त रूप से भारत सरकार के युवा मामले एवं खेल मंत्रालय के तत्वाधान में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान विभिन्न क्षेत्रों से 10,000 से अधिक लोगों ने भाग लिया। यह गुवाहाटी के खानपारा के एएयू पशु चिकित्सा महाविद्यालय मैदान में आयोजित किया गया, जो असम योग विद्यालय द्वारा संचालित किया गया तथा भागीदारों के योग प्रदर्शन के साथ शुरू किया गया। इसके बाद अंतर्राष्ट्रीय भाईचारे, शांति, सद्भावना और अच्छे स्वास्थ्य के लिए ध्यान और प्रार्थनाएं की गईं।

केन्द्रीय युवा मामले एवं खेल राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री सर्बानंद सोनोवाल ने 21 जून को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करने की दिशा में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पहल के लिए उन्हें बधाई दी। श्री सोनोवाल ने अपने भाषण के दौरान स्वस्थ शरीर एवं स्वस्थ मन के निर्माण में योग के महत्व को रेखांकित किया, जो आगे चलकर एक स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करता है।

उन्होंने कहा कि प्रतिदिन केवल कुछ मिनटों तक योग करने से एक आदमी शारीरिक और मानसिक दोनों रूप में स्वस्थ रह सकता है।

श्री सोनोवाल ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर बड़ी संख्या

समुद्र में योग : भारतीय नौसेना ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया

भारतीय नौसेना की ताकत इसके उच्च प्रेरित, अनुशासित और अच्छी तरह प्रशिक्षित कर्मचारी हैं, जो किसी भी हालात में राष्ट्र की सेवा करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। नौसेना के कर्मचारी समुद्र में कठिन परिस्थितियों में जहाजों और पनडुब्बियों में लंबी अवधि तक काम करते हैं। इससे उन पर शारीरिक और मानसिक दबाव बन जाता है, जो संचालनगत नियुक्तियों के दौरान अपने परिवारों से काफी समय तक दूर



रहने के कारण और बढ़ जाता है। यह चुनौती इस वजह से भी अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि जहाजों और पनडुब्बियों पर सवार नौसेना कर्मचारियों के पास खुली जगह तथा उपकरणों की सुविधा नहीं होती, जिससे वे नियमित रूप से शरीर को स्वस्थ रखने वाली शारीरिक व मानसिक क्रियाएं कर सकें। इसलिए भारतीय नौसेना अपने कर्मचारियों की शारीरिक और मानसिक मुस्तैदी पर विशेष जोर देती है।

योग के लाभों को महसूस करते हुए भारतीय नौसेना ने पहले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए 'समुद्रों में योग' को अपनी विषय वस्तु घोषित की है। 21 जून की सुबह पूर्व में दक्षिणी चीनी समुद्र से लेकर भूमध्य सागर तक तैनात भारतीय नौसेना के सभी जहाजों पर योग के विभिन्न लाभों को उचित ढंग से प्रदर्शित किया गया। भारतीय नौसेना ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह की सफलता और अपने कर्मचारियों के बीच योग संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए बेहद सक्रिय तरीके से काम किया है। जहाजों तथा पनडुब्बियों समेत सभी नौसेना स्टेशनों और इकाईयों पर सभी कर्मचारियों एवं उनके परिवारों के लिए बहु-केन्द्रीय गतिविधियां आयोजित की गईं। नई दिल्ली में 14-21 जून तक आईएनएस इंडिया एवं नौसेना परिवारों के आवासीय क्षेत्र में सप्ताह भर का योग शिविर आयोजित भी किया गया।

स्वास्थ्य के लिए योग पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रधानमंत्री का संबोधन

स्व से सार्वभौम की यात्रा है योग



प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर 21 जून को दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में कहा कि योग स्व से सार्वभौम की यात्रा है। उन्होंने कहा कि अगर हम अपने मानव शरीर को एक बेजोड़ रचना मानते हैं, तो योग एक “उपयोगकर्ता नियमावली” की तरह है, जो उस रचना की असीमित संभावनाओं का ज्ञान कराती है। इस अवसर पर समग्र स्वास्थ्य के लिए योग के बारे में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि योग एक मनःस्थिति (अवस्था) है,

जो किसी वस्तु अथवा प्रणाली (व्यवस्था) से भिन्न है। उन्होंने कहा कि योग के जरिए जो एकता व्यक्त की जा रही है, वह अन्य देशों के हमारे भाइयों और बहनों को एकजुट कर रही है, हमारे दिलो-दिमाग को जोड़ रही है।

श्री मोदी ने कहा कि यह समर्थन सिर्फ भारत के लिए नहीं है, बल्कि योग की महान परम्परा के प्रति है। उन्होंने योग को स्वयं के साथ, अपने शरीर के साथ, आसपास के वातावरण और प्रकृति के साथ सद्भाव हासिल करने का एक साधन बताया है। उन्होंने कहा कि अनुशासन के साथ सही



में आने पर गुवाहाटी के लोगों को भी बधाई दी और खासकर, इस दिशा में एनवाईकेएस, एनएसएस और एसएआई के अधिकारियों द्वारा की गई कड़ी मेहनत का भी जिक्र किया।

‘योग-शारीरिक, मानसिक, सामाजिक संपूर्ण स्वास्थ्य अर्जित करने के लिए आवश्यक : डॉ. हर्षवर्धन

केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिक तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने देश के युवाओं से योग जीवन अपनाने की अपील की है, जिससे कि वे जीवनभर की मानसिक एवं शारीरिक तंदुरुस्ती सुनिश्चित कर सकें। 21 जून को खड़कपुर में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) के छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मैं विज्ञान से जुड़ा व्यक्ति हूँ और चिकित्सा की एलोपैथिक शाखा में प्रशिक्षण के द्वारा सर्जन हूँ। मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि योग का विज्ञान से कोई अंतर्विरोध नहीं है। यह विज्ञान है।

मैं आप होनहार इंजीनियरों को योग के साथ प्रयोग करने के लिए आमंत्रित करता हूँ, क्योंकि बहुत जल्द आप महसूस कर लेंगे कि यह आपको ज्यादा सामाजिक और स्वस्थ व्यक्ति बनाने के अतिरिक्त आपकी उत्पादकता को भी बढ़ाता है।

उन्होंने वर्ष 2000 में विश्व स्वास्थ्य संगठन के नीति निर्माताओं की कोबे बैठक में भाग लेने के अवसर का स्मरण करते हुए कहा कि वहां इस बात पर सर्वसहमति थी कि स्वास्थ्य एक व्यक्ति विशेष की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक तंदुरुस्ती है, केवल रोगों और दुर्बलताओं से मुक्ति भर नहीं है। उन्होंने कहा कि विश्व के अग्रणी नीति निर्माताओं की इस बात पर आम सहमति थी कि इसे अर्जित करने के लिए योग सबसे क्षमतापूर्ण स्वदेशी समाधानों में से एक है। डॉ. हर्षवर्धन ने खड़कपुर शहर में नेहरू युवा केन्द्र और पतंजलि पीठ द्वारा आयोजित एक वृहद शिविर में भी भाग लिया। प्रधानमंत्री के आह्वान पर हजारों लोग योग दिवस का आनन्द उठाने के लिए वहां एकत्र हुए। ■

योगाभ्यास करने पर योग जीवन में परिपूर्णता ला सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के लिए विश्व के एकजुट होने के अवसर पर योग से बहुत अधिक अपेक्षाएं होना स्वाभाविक है, जिन्हें विश्व के कल्याण के लिए पूरा करने की जिम्मेदारी निभाने के लिए भारत तैयार है।

प्रधानमंत्री ने योग को मानवता के प्रति एक सामूहिक उपहार बताया। उन्होंने कहा कि भले ही इसकी उत्पत्ति भारत में हुई है, लेकिन योग को ऊर्जा दुनियाभर में इसका अभ्यास करने वाले करोड़ों लोगों से प्राप्त हुई है। उन्होंने सामूहिकता, भाईचारे और वसुधैव कुटुम्बकम् की संस्कृति के विकास और उसे सुदृढ़ करने के प्रति भारत की वचनबद्धता दोहराई। श्री मोदी ने कहा कि श्री अरविंदो के जमाने में ये कहीं नजर नहीं आता था कि योग जन सामान्य का विषय बनेगा, बहुत ही सीमित दायरे में था लेकिन योगी अरविन्द की दृष्टि थी और उन्होंने ये तब देखा था कि वो वक्त आएगा जब योग जन सामान्य के जीवन का हिस्सा बनेगा। वो कुछ परम्पराओं में या संतों तक सीमित नहीं रहेगा, वो जन जन तक पहुंचेगा। आज से करीब 75 साल पहले श्री अरविन्द ने जो देखा था वो आज हम अनुभव कर रहे हैं। और यही तो ऋषि मुनियों के सामर्थ्य का परिचायक होता है और ये ताकत आती है योग के समर्पण से, योग कि अनुभूति से और योगमय जीवन से आती है। प्रधानमंत्री ने कहा की मैं भारत की भावना की, हमारे लोगों की सामूहिक ऊर्जा के साथ अधिक बराबरी वाले संसार के सृजन की प्रतिज्ञा करता हूँ ऐसा संसार जहां भय न हो और शांति हो। हम

शेष पृष्ठ 26 पर

बिहार

योग से भारतीय संस्कृति का दुनिया में मान-सम्मान बढ़ा है : अमित शाह



भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर बिहार की राजधानी पटना के मोईनुल हक स्टेडियम में योग दिवस कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर स्टेडियम में मौजूद करीब 20 हजार लोगों ने एक साथ योग किया।

श्री अमित शाह ने योग कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए कहा, 'योग से भारतीय संस्कृति का दुनिया में मान- सम्मान बढ़ा है। इसका उद्देश्य विश्व कल्याण है। योग पूरी दुनिया को जोड़ने का महत्वपूर्ण कारक बन गया है। विश्व को भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर है 'योग'। प्रथम अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की हार्दिक शुभकामनायें।'

श्री शाह ने कहा, 'मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि जो लोग आज विश्व योग दिवस में हिस्सा ले रहे हैं, उनकी लंबी उम्र और खुशियां मिलें।' उन्होंने अपने संक्षिप्त संबोधन में योग से होने वाले विभिन्न लाभों का जिक्र किया और कहा कि योग का मूलभूत सिद्धांत शरीर, मन और बुद्धि का विकास तथा आत्मा से मिलन है।

भाजपा अध्यक्ष ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर योग को संयुक्त राष्ट्र संघ से मान्यता दिलाने के लिए बधाई दी और आशा जताई कि आज जहां पूरी दुनिया में संघर्ष हो रहा है, वहीं योग 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा को चरितार्थ करेगा।

स्टेडियम में आयोजित योग शिविर में उपस्थित लोगों को दो मुस्लिम किशोरियों ने योगासन कराया। योग सत्र में श्री अमित शाह के अलावा भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री सुशील कुमार मोदी, पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री सी पी ठाकुर, बिहार विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री नंदकिशोर यादव ने भाग लिया।■

15 लाख पार्टी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देगी भाजपा

भारतीय जनता पार्टी ने अपना महत्वाकांक्षी महा-प्रशिक्षण अभियान 30 जून 2015 से शुरू करने का निश्चय किया है। यह देश में किसी पार्टी द्वारा अपनी किस्म का पहला नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम है।

जब से भारी जनादेश के साथ पार्टी केन्द्र में सत्ता में आई है तब से यह भाजपा का तीसरा महत्वपूर्ण संगठनात्मक अभियान है। पार्टी ने पहले तो एक विश्व रिकार्ड कायम किया जब उसके बड़ी छलांग लगाकर अपनी पार्टी के लिए 10.5 करोड़ सदस्यों को सदस्य बनाया। फिर उसने महासम्पर्क अभियान का दायित्व लेकर पार्टी सदस्यों की तीन गुणा वृद्धि की पुष्टि और सत्यापित किया। तीसरे उसने चार-सतही सदस्यों के प्रशिक्षण कार्यक्रम अपनाते हुए पार्टी संगठनात्मक ढांचे के सम्पूर्ण आयाम को शामिल करने का फैसला लिया।

चार महीनों की दीर्घकालीन कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रथम चरण तीन दिवसीय राष्ट्रीय स्तर का प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर है जिसका उद्घाटन पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह 1 जुलाई 2015 को दिल्ली में करेंगे। इसमें लगभग 250 व्यक्ति शामिल होंगे जिनमें पार्टी के राष्ट्रीय पदाधिकारी शामिल हैं तथा प्रत्येक राज्य से पांच प्रतिनिधि होंगे, जो अपने अध्यक्ष द्वारा घोषित अखिल भारतीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के सदस्यों को प्रशिक्षित करेंगे। इसी प्रकार प्रशिक्षकों की कार्यशाला प्रत्येक राज्य में आयोजित की जाएगी, जिसमें प्रशिक्षकों को पार्टी द्वारा लिए जा रहे इस विशाल कार्यक्रम के बारे में समझाया जाएगा।

इस अभियान के पहले चरण में मण्डल वर्ग को शामिल किया जाएगा। देश में लगभग 11000 मण्डल हैं। प्रत्येक मण्डल चुनिंदा 150 कार्यकर्ताओं के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करेगा। किसी भी शिविर में 150 से अधिक कार्यकर्ता नहीं होंगे। यदि किसी विशेष मण्डल में इससे अधिक संख्या बनती है तो वह मण्डल

चार-सतही सदस्यों के प्रशिक्षण कार्यक्रम अपनाते हुए पार्टी संगठनात्मक ढांचे के सम्पूर्ण आयाम को शामिल करने का फैसला

दो अलग-अलग शिविर आयोजित करेगा। दूसरा चरण जिला स्तर शिविर होंगे। जहां तक भागीदारों की संख्या का प्रश्न है, यहां भी यही नियम लागू होगा। राज्य स्तरीय शिविर तीसरे चरण की पंक्ति में आते हैं। यहां भी भागीदारों की संख्या के बारे में यही नियम लागू होगा। यहां भी प्रत्येक शिविर के लिए केवल 150 प्रतिनिधि रहेंगे।

राज्यों में सभी शिविर साथ-साथ चलेंगे और अंत में एक राष्ट्रीय स्तर शिविर होगा। सम्पूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम चार महीनों में सम्पन्न हो जाने की आशा है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए सभी प्रकार के आधुनिक तकनीकी उपकरणों का इस्तेमाल किया जाए। इस खास राज्य के विशिष्ट सामाजिक-राजनीतिक पहलुओं को उजागर करने के लिए अलग से सत्र का आयोजन किया जाएगा और साथ ही केन्द्रीय सरकार की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए सक्रिय

कार्यकर्ताओं का अद्यतन करने के लिए सत्र लगाया जाएगा और इन्हें भाजपा-शासित राज्यों में हुई अनेकानेक नूतन पहल को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने के बारे में उन्हें समझाया जाएगा।

इस तीव्र प्रशिक्षण कार्यक्रम की समाप्ति पर उम्मीद है 15 लाख कार्यकर्ता मूल वैचारिक धारा और राजनीतिक मिशन को समझ सकेंगे जिसमें भाजपा के पास राजनैतिक संचार में एक नया मानक और कार्यकर्ता प्रशिक्षण स्थापित होगा। अभी तक किसी अन्य पार्टी के पास इतने विशाल स्तर का काम नहीं हुआ है।

पार्टी महासचिव श्री मुरलीधर राव के अधीन विशेषज्ञों की टीम इस बारे में प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषयों, साहित्य और योजना तैयार कर रही है, जिसका नाम पार्टी के प्रतिभावान मूर्ति दीनदयाल उपाध्याय पर रखा जाएगा। बंगलौर में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में टीम की घोषणा कर दी गई थी और इसमें निम्नलिखित सदस्य होंगे श्री वी. सतीश, डा. महेश चन्द्र शर्मा, श्री एल. गणेशन, डा. आर. बालाशंकर, श्री रामप्यारे पाण्डे और श्री सुरेश पुजारी। यह भी महत्वपूर्ण है कि यह नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम महान दिग्गज की जन्म शताब्दी के अवसर के साथ मिल रहा है, जिन्होंने अध्यात्म मानववाद की पार्टी विचारधारा को प्रतिपादित किया था।

इन सभी शिविरों का कांटेंट व पैटर्न और उसी प्रकार का होगा और इसे राष्ट्रीय स्तर पर डिजाइन किया गया है। इसके अन्तर्विषय इसी प्रकार के होंगे परन्तु उच्च स्तर के लिए सामग्री की गहराई और व्यापकता अधिक रहेगी।■

बिहार विकास के लिए एनडीए को वोट दें : अनंत कुमार

केन्द्रीय रसायन तथा उर्वरक मंत्री श्री अनंत कुमार ने 16 जून 2015 को पटना का दौरा किया। उन्हें हाल में ही आगामी विधानसभा चुनावों के लिए प्रभारी भी नियुक्त किए गया है।

श्री अनंत कुमार ने एक प्रेस सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि राज्य के विकास को सुनिश्चित करने के लिए एनडीए को सत्ता में लाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि बिहार राज्य में श्री लालू प्रसाद यादव के अनेक वर्षों तक कुशासन के कारण यह राज्य संकट में पड़ गया है। उन्होंने कहा कि यहां तक कि श्री नीतीश कुमार ने सुशासन लाने का कोई प्रयास नहीं किया क्योंकि वह भी श्री लालू यादव के हाथों का उपकरण बन कर रह गए। उन्होंने बिहार के लोगों से अनुरोध किया कि वे राज्य में विकास सुनिश्चित करने के लिए एनडीए को वोट दें और सुनिश्चित करें कि वे फिर से उन पार्टियों के हाथों का शिकार न बन जाएं जो अनेक वर्षों से राज्य में जंगलराज बनाए थे।

श्री अनंत कुमार ने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने एचएफसीएल की बरौनी फर्टिलाइजर इकाई को पुनः अनुमोदित किया है, जो 1999 में बंद हो गई थी। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार की दूरदृष्टि के कारण अनेक नवीन उपाए किए गए हैं ताकि देश का विकास हो सके। बरौनी फर्टिलाइजर इंडस्ट्री के पास फैंक्टरी के



लिए 400 एकड़ से अधिक की भूमि है और टाउनशिप के लिए 280 एकड़ भूमि है।

यह देखते हुए कि जल तथा विद्युत कनेक्टिविटी के साथ सम्पूर्ण भूमि उपलब्ध हैं, सभी यूनिटों के लिए भारी इंफ्रास्ट्रक्चर मौजूद हैं, इसके अलावा भी यूरिया की घरेलू मांग भी है तथा यह भी देखा गया है कि इसकी आपूर्ति-मांग में भारी अंतर है तथा साथ ही घरेलू मांग की पूर्ति के लिए आयात की भारी लागत चुकानी

पड़ती है। अतः भारत सरकार ने निर्णय लिया है कि 'बोली लगाकर' यूनिट को फिर से जीवित किया जाए। केन्द्र सरकार 'एम्पावर्ड कमिटी' का गठन करने का अनुमोदन किया है, जो इसे पुनर्जीवित प्रक्रिया को देखेगी।

मंत्री महोदय ने आगे कहा कि 500 व्यक्तियों को सीधे रोजगार मिलेगा और अप्रत्यक्ष रूप से 2500 लोगों को रोजगार मिलेगा और इससे 5000-6000 करोड़ रुपए का निवेश प्राप्त होगा जिससे इस क्षेत्र में आर्थिक विकास को प्रोत्साहन मिलेगा। स्थानीय रूप से यूरिया की उपलब्धि से किसानों को लाभ होगा। इकाई के पुनर्जीवित होने से बहुत हद कर फर्टिलाइजरों के आयात में भी कमी आएगी।

श्री अनंत कुमार ने आगे कहा कि ऐसे कुछ विषय हैं जिन्हें राज्य सरकार को समाधान करना है, जैसे एचएफसीएल से लीज पर ट्रांसफर, नए संयंत्र के लिए नए बिजली कनेक्शन प्रदान करना और वाटर लिंकेज आदि। ■

बिहार

अनंत कुमार चुनाव प्रभारी और धर्मेन्द्र प्रधान सह प्रभारी बने

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने बिहार विधानसभा चुनाव की दृष्टि से श्री अनंत कुमार (केन्द्रीय मंत्री व पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री) को चुनाव प्रभारी तथा श्री धर्मेन्द्र प्रधान (केन्द्रीय राज्यमंत्री, स्वतंत्र प्रभार व पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री) को सह-चुनाव प्रभारी घोषित किया है।

भाजपा राष्ट्रीय पदाधिकारियों की घोषणा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 17 जून को पार्टी के राष्ट्रीय पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की। श्री शाह ने तीन नए उपाध्यक्ष, इतनी ही संख्या में महामंत्री और चार मंत्री नियुक्त किए।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री ओम माथुर : वरिष्ठ नेता, पूर्व में तीन बार भाजपा के महासचिव रहे। पूर्व राज्यसभा सदस्य, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राजस्थान प्रदेश, वर्तमान में उ.प्र. भाजपा के प्रभारी हैं।

श्री श्याम जाजू: पूर्व भाजपा मुख्यालय प्रभारी रहे हैं। वर्तमान में राष्ट्रीय मंत्री एवं उत्तराखण्ड के प्रभारी हैं। पूर्व में पंजाब प्रदेश के भी सह-प्रभारी रहे।

श्री अविनाश राय खन्ना: पंजाब से राज्यसभा सदस्य हैं। जम्मू-कश्मीर के प्रभारी हैं। पूर्व में पंजाब से लोकसभा सदस्य भी रहे हैं।

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री कैलाश विजयवर्गीय : वर्तमान में मध्य प्रदेश में कैबिनेट मंत्री हैं। छह बार से निरंतर इंदौर से विधायक हैं। पूर्व में इंदौर नगर निगम के मेयर भी रहे। हरियाणा विधानसभा चुनाव के चुनाव प्रभारी रहे हैं।

श्री अरुण सिंह: वर्तमान में राष्ट्रीय मंत्री हैं तथा ओडिशा प्रदेश के प्रभारी हैं। पेशे से चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट हैं। भाजपा के सदस्यता अभियान समिति के सदस्य भी हैं।

डॉ. अनिल जैन: वर्तमान में राष्ट्रीय मंत्री हैं तथा हरियाणा प्रदेश के प्रभारी हैं। पूर्व में झारखण्ड एवं उत्तराखण्ड के प्रदेश प्रभारी रहे। पेशे से चिकित्सक हैं।

राष्ट्रीय मंत्री

श्री सुरेश पुजारी: पूर्व में ओडिशा प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष रहे। भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य हैं। पूर्व में त्रिपुरा के प्रभारी रहे।

श्री महेन्द्र सिंह : उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ नेता हैं। उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य हैं एवं वर्तमान में असम के प्रभारी एवं राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्य हैं।

श्री महेश गिरी: दिल्ली लोकसभा सदस्य हैं। सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से जुड़े रहे सक्रिय कार्यकर्ता हैं।

श्री फारूख खान : जम्मू कश्मीर पुलिस के आईजी पद से सेवा-निवृत्त आईपीएस अधिकारी हैं। पुलिस विभाग में कई बार वीरता पुरस्कार से सम्मानित हुए। आपके पिता कर्नल पीर मोहम्मद खान जनसंघ के जम्मू कश्मीर प्रदेश के अध्यक्ष रहे। वर्तमान में आप जम्मू कश्मीर प्रदेश के प्रवक्ता हैं। ■

भाजपा महिला मोर्चा ने शुरू की 2800 किलोमीटर लंबी 'नारी सम्मान यात्रा'

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने सप्ताह भर चलने वाली 'नारी सम्मान यात्रा' को 17 जून को नई दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस यात्रा का उद्देश्य महिलाओं में उनकी सुरक्षा और उनके तथा बालिकाओं के लिए विभिन्न सामाजिक कल्याण की योजनाओं के प्रति जागरूकता फैलाना है।

यह यात्रा हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल का सफर तय करते हुए 24 जून को कोलकाता में पूरी होगी। पहले चरण में यह 2800 किलोमीटर का रास्ता तय करेगी। देश में इस तरह की और भी यात्राएं निकालने की पार्टी की योजना है। भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती विजया राहतकर ने बताया कि इस यात्रा के जरिए देश की महिलाओं को भाजपा से जोड़ने का भी प्रयास होगा। श्रीमती राहतकर ने बताया कि इस यात्रा का उद्देश्य विकास प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना है। इसके साथ ही जन धन योजना, बेटा बचाओ, बेटा पढ़ाओ, नारी सम्मान योजना और निर्भया कोष को बढ़ाने जैसी महिलाओं और बालिकाओं संबंधी सरकार द्वारा शुरू की गई नयी पहलों के बारे में महिलाओं के बीच जागरूकता बढ़ाना है। ■



भूटान, बांग्लादेश व नेपाल के साथ महत्वपूर्ण मोटर वाहन समझौता

भूटान की राजधानी थिंपू में 15 जून को अपने तीन पड़ोसी देशों-बांग्लादेश, भूटान व नेपाल से भारत का मोटर वाहन सड़क-पारगमन समझौता हुआ। यह ऐतिहासिक समझौता होने के साथ ही एक नए युग का प्रारम्भ भी है। इस समझौते से इन देशों में यात्री व माल वाहनों का निर्बाध आवागमन सुनिश्चित होगा। इसी तरह का एक समझौता भारत, म्यांमार व थाइलैंड के बीच भी होना है जिससे एशियाई क्षेत्र में व्यापक आर्थिक सहयोग की राह खुलेगी।

सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने 15 जून को भूटान की राजधानी थिंपू में यात्री, व्यक्तिगत व माल ढुलाई वाहनों के यातायात के नियमन के लिए बांग्लादेश, भूटान, भारत व नेपाल (बीबीआईएन) मोटर वाहन समझौते (एमवीए) पर हस्ताक्षर किए।

इस अवसर पर तीनों अन्य देशों के परिवहन मंत्री भी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि, इसके अलावा भारत, म्यांमार व थाइलैंड ने भी इसी तर्ज पर एक मोटर वाहन समझौता करने पर सहमति जताई है।

बीबीआईएन एमवीए से जहां परिवहन लागत घटेगी वहीं मल्टी मॉडल परिवहन तथा पारगमन सुविधाओं का भी विकास होगा और चारों देशों के बीच संपर्क व व्यापार को बल मिलेगा। इस समझौते के तहत चारों देश समझौते के कार्यान्वयन के लिए जुलाई से छह महीने के कार्ययोजना बनाएंगे। श्री गडकरी ने

समझौते के मुख्य बिंदु

- ♦ 15 जून, 2015 को बांग्लादेश, भूटान, भारत और नेपाल के बीच भूटान की राजधानी थिंपू में यात्री, व्यक्तिगत एवं माल ढुलाई वाहनों के यातायात के नियमन लिए एक समझौता संपन्न हुआ।
- ♦ इस समझौते से इस उपक्षेत्र में सड़क यातायात सुरक्षित, आर्थिक और पर्यावरण के लिहाज से अनुकूल होगा।
- ♦ इन चारों देशों के सीमाओं में यात्रियों एवं वस्तुओं की निर्बाध आवाजाही का फायदा यहां के लोगों को मिलेगा।
- ♦ इस समझौते के क्रियान्वयन पर आने वाले खर्च को प्रत्येक पक्ष स्वयं ही वहन करेंगे।

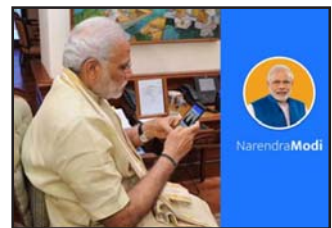
इस समझौते को शांति, स्थिरता व समृद्धि के लिए क्षेत्रीय एकीकरण की दिशा में राष्ट्रीय नेताओं की प्रतिबद्धताओं को दिखाने वाला पहला व छोटा लेकिन महत्वपूर्ण कदम बताया है।

श्री गडकरी ने कहा कि भारत इसी तरह का समझौता म्यांमार व थाइलैंड के साथ करने की दिशा में भी काम करेगा। उन्होंने कहा, 'भारत, म्यांमार व थाइलैंड के बीच एक महत्वपूर्ण सहमति बनी है। इन तीनों देशों ने दक्षिण मोटर वाहन समझौते के मसौदे की तर्ज पर ऐसा ही एमवीए खाका विकसित करने पर सहमति जताई है।'

उन्होंने कहा कि इस बारे में सचिव स्तर की बातचीत इसी महीने बैंगलुरु में हुई जिसमें समझौते के पाठ (टेक्स्ट) पर सहमति बनी। ■

प्रधानमंत्री ने नरेन्द्र मोदी मोबाइल ऐप्प प्रारंभ किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 17 जून को नरेन्द्र मोदी मोबाइल ऐप्प प्रारंभ किया। यह एप्लिकेशन श्री नरेन्द्र मोदी के रोजमर्रा के कार्यकलापों की जानकारी उपलब्ध कराता है। यह एप्लिकेशन श्री नरेन्द्र मोदी की ओर से सीधे संदेश और ई-मेल प्राप्त करने का अवसर



प्रस्तुत करता है। इसमें टू डू टास्क्स के माध्यम से योगदान देने और बैज हासिल करने का विकल्प भी उपलब्ध है। इस एप्लिकेशन के जरिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'मन की बात' संस्करणों में से कोई भी संस्करण सुना जा सकता है, उनके ब्लॉग को पढ़ा जा सकता है और जीवनी खण्ड से उनके बारे में अतिरिक्त जानकारी प्राप्त की जा सकती है। यह एप्लिकेशन एक इन्फोग्राफिक्स खण्ड सहित केन्द्र सरकार की पहल और उपलब्धियों पर समग्र सूचना उपलब्ध कराता है। ■

खरीफ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की आर्थिक कार्य समिति ने 17 जून को 2015-16 ऋतु के लिए खरीफ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य को मंजूरी दे दी है। मंत्रिमंडल ने धान का एमएसपी 50 रुपये बढ़ाया है। इससे इस साल सामान्य किस्म का एमएसपी 1,410 रुपये प्रति क्विंटल तथा ए ग्रेड के धान का एमएसपी 1,450 रुपये क्विंटल होगा। 2014-15 के लिये सरकार ने सामान्य किस्म के धान के लिए 1,360 रुपये तथा ए ग्रेड के धान के लिये 1,400 रुपये प्रति क्विंटल का एमएसपी तय किया था। देश में दाल के उत्पादन बढ़ाने और बढ़ती कीमत पर अंकुश लगाने के लिए इस वर्ष के लिए दलहन का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 275 रुपये प्रति क्विंटल तक बढ़ा दिया है।

कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने कहा कि बोनस शामिल किये जाने के बाद 2015-16 के लिये तुअर और उड़द दोनों के लिये एमएसपी 4,625 रुपये प्रति क्विंटल तय किया गया है। यह पिछले साल से 275 रुपये प्रति क्विंटल अधिक है। इसी प्रकार, मूंग का एमएसपी 250 रुपये बढ़ाकर 4,850 रुपये किया गया है। 2014-15 में यह 4,600 रुपये क्विंटल था। बयान में कहा गया है कि दलहन के एमएसपी में वृद्धि से उम्मीद है कि किसानों को कीमत को लेकर संकेत मिलेगा और वे दाल की उत्पादकता बढ़ाने के लिये रकबा और निवेश बढ़ाएंगे। यह एमएसपी अक्तूबर

तुअर और उड़द दोनों के लिये एमएसपी 4,625 रुपये प्रति क्विंटल तय किया गया है। यह पिछले साल से 275 रुपये प्रति क्विंटल अधिक है। इसी प्रकार, मूंग का एमएसपी 250 रुपये बढ़ाकर 4,850 रुपये किया गया है। 2014-15 में यह 4,600 रुपये क्विंटल था।

2015 से प्रभावी होगा।

इसके अलावा मंत्रिमंडल ने यह भी निर्देश दिया कि जरूरत पड़ने पर दलहन और तिलहन के लिये भरोसेमंद खरीद व्यवस्था की जाएगी। बयान के अनुसार पिछले सप्ताह दाल के आयात का निर्णय किया गया। अन्य उपायों के साथ इससे दलहन की कीमत पर अंकुश लगेगा। नकदी फसलों में लंबे रेशे वाले कपास का एमएसपी 50 रुपये बढ़ाकर 4,100 रुपये प्रति क्विंटल जबकि मध्यम रेशे वाले कपास का न्यूनतम समर्थन मूल्य 3,800 रुपये किया गया है। अन्य फसलों में सीसीईए ने रागी का एमएसपी 100 रुपये क्विंटल बढ़ाकर 1,650 रुपये क्विंटल, ज्वार के लिये 40 रुपये क्विंटल बढ़ाकर 1,590 रुपये, बाजरा 25 रुपये क्विंटल बढ़ाकर 1,275 रुपये तथा मक्का 15 रुपये क्विंटल बढ़ाकर 1,324 रुपये क्विंटल किया गया है। तिलहन के मामले में सूर्यमुखी का एमएसपी 50 रुपये बढ़ाकर 3,800 रुपये प्रति क्विंटल जबकि पीले सोयाबीन का एमएसपी 40

रुपये बढ़ाकर 2,600 रुपये प्रति क्विंटल तथा मूंगलफा का एमएसपी 30 रुपये बढ़ाकर 4,030 रुपये प्रति क्विंटल किया गया है। तिल का एमएसपी 100 रुपये बढ़ाकर 4,700 रुपये प्रति क्विंटल तथा नाइजरसीड का न्यूनतम समर्थन मूल्य 50 रुपये बढ़ाकर 3,650 रुपये क्विंटल किया गया है।

कृषि लागत एवं मूल्य आयोग की सिफारिशों के आधार पर न्यूनतम समर्थन मूल्य को मंजूरी दी गई है। आयोग उत्पादन की लागत, समग्र मांग-आपूर्ति, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय कीमत, अंतर-फसल कीमत तुल्यता, कृषि एवं गैर कृषि क्षेत्र के बीच व्यापार की शर्तों को ध्यान में रखते हुए न्यूनतम समर्थन मूल्य की सिफारिश करता है।

आयोग विशेषज्ञ निकाय है और आमतौर से इसकी सिफारिशें स्वीकार कर ली जाती हैं। हालांकि दालों की भारी कमी की तुलना में मोटे अनाज की विशाल अधिशेष मात्रा के महेनजर मंत्रिमंडल ने दालों पर 200 रुपये प्रति क्विंटल बोनस देने का फैसला किया है। यह न्यूनतम समर्थन मूल्य की आयोग की सिफारिश के अलावा है। इससे किसान दालों की उत्पादकता में वृद्धि के लिए रकबा और निवेश बढ़ाने के लिए प्रेरित होंगे। मानसून के कमजोर रहने के अनुमान के बीच सरकार ने कहा कि वह स्थिति से निपटने के लिये पूरी तरह तैयार है। मानसून की प्रगति के आधार पर 650 जिलों में आपात योजना लागू करने की तैयारी है। ■

‘2022 तक सभी के लिए आवास’ योजना को केंद्र सरकार की मंजूरी

केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने ‘2022 तक सभी के लिए आवास’ योजना शुरू करने को 17 जून को मंजूरी दे दी जिससे शहरी गरीबों एवं झुग्गी झोपड़ी में रहने वालों को कम ब्याज दर पर सस्ते मकान उपलब्ध कराने का मार्ग प्रशस्त हो गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों एवं निम्न

विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक, वर्तमान में 10.50 प्रतिशत की ब्याज दर के साथ 15 साल की पुनर्भुगतान अवधि के छह लाख रुपये के स्वीकार योग्य ऋण पर ईएमआई 6,632 रुपये बैठती है। मंत्रिमंडल द्वारा ऋण से जुड़ी 6.50 प्रतिशत की ब्याज सहायता देने के फैसले से ईएमआई घटकर 4,050 रुपये पर आ जाएगी

भूमि को संसाधन घटक के तौर पर इस्तेमाल करने वाले निजी डेवलपर्स की भागीदारी के साथ झुग्गी बस्तियों की पुनर्विकास योजना के तहत प्रति लाभार्थी औसतन एक लाख रुपये की केंद्रीय सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों को इस तरह की परियोजनाओं को व्यवहारिक बनाने के लिए इस अनुदान का उपयोग किसी भी बस्ती पुनर्विकास योजना के लिए करने की स्वतंत्रता होगी।

दूसरे वर्ग में, ऋण से जुड़ी सब्सिडी योजना के जरिए आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और निम्न आय समूह (एलआईजी) लाभार्थियों को प्रत्येक आवास ऋण पर 6.50 प्रतिशत ब्याज सब्सिडी उपलब्ध कराई जाएगी।

वहीं तीसरे वर्ग में निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों की साझीदारी में सस्ते मकान उपलब्ध कराने के लिए प्रत्येक लाभार्थी को डेढ़ लाख रुपये की केंद्रीय सहायता उपलब्ध कराई जाएगी जिससे निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों को शामिल कर शहरी गरीबों के लिए आवास को प्रोत्साहन मिल सकेगा।

हालांकि इस वर्ग में एक शर्त है कि परियोजनाओं की 35 प्रतिशत आवासीय इकाइयां आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों के लिए अलग रखी जाएंगी। चौथे वर्ग में प्रत्येक पात्र शहरी गरीबी लाभार्थी को अपना मकान बनाने या मौजूदा मकानों को दुरुस्त करने के लिए डेढ़-डेढ़ लाख रुपये तक की केंद्रीय सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। ■

कुल मिलाकर अगले सात साल के दौरान शहरी इलाकों में 2 करोड़ नए मकान बनाने के लिए राष्ट्रीय शहरी आवास मिशन के तहत विभिन्न मदों के अंतर्गत एक लाख रुपये से 2.30 लाख रुपये के दायरे में केंद्रीय सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। केंद्रीय मंत्रिमंडल की पूर्व की मंजूरी के मुताबिक, राष्ट्रीय शहरी आवास मिशन में चार घटक हैं। भूमि को संसाधन घटक के तौर पर इस्तेमाल करने वाले निजी डेवलपर्स की भागीदारी के साथ झुग्गी बस्तियों की पुनर्विकास योजना के तहत प्रति लाभार्थी औसतन एक लाख रुपये की केंद्रीय सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों को इस तरह की परियोजनाओं को व्यवहारिक बनाने के लिए इस अनुदान का उपयोग किसी भी बस्ती पुनर्विकास योजना के लिए करने की स्वतंत्रता होगी।

आय वर्ग सहित आर्थिक रूप से कमजोर तबके से जुड़े लाभार्थियों को आवास ऋण पर ब्याज सहायता बढ़ाकर 6.50 प्रतिशत तक करने की अंतर-मंत्रालयी समिति की सिफारिशें स्वीकार कर ली। मंत्रिमंडल के इस निर्णय से शहरी गरीबों को करीब 2.30-2.30 लाख रुपये तक का फायदा होगा क्योंकि इससे उनकी समान मासिक किस्त करीब 2,852 रुपये प्रति माह तक घट जाएगी। आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन

जिससे शहरी गरीब को प्रतिमाह 2,582 रुपये का फायदा होगा।

कुल मिलाकर अगले सात साल के दौरान शहरी इलाकों में 2 करोड़ नए मकान बनाने के लिए राष्ट्रीय शहरी आवास मिशन के तहत विभिन्न मदों के अंतर्गत एक लाख रुपये से 2.30 लाख रुपये के दायरे में केंद्रीय सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। केंद्रीय मंत्रिमंडल की पूर्व की मंजूरी के मुताबिक, राष्ट्रीय शहरी आवास मिशन में चार घटक हैं।

वैचारिकी : जयंती 6 जुलाई पर विशेष

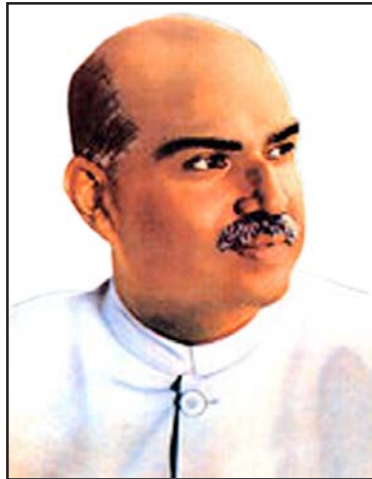
भारतीय जनसंघ ही क्यों ?

- डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी

21 अक्टूबर 1951 को नई दिल्ली में भारतीय जनसंघ का प्रथम अधिवेशन हुआ। इस प्रथम अधिवेशन के अवसर पर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना के प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारतीय जनसंघ की भूमिका पर चर्चा करते हुए कहा कि विरोधी दल के रूप में वे अविवेकपूर्ण विरोध के पक्ष में नहीं हैं, बल्कि ऐसे दृष्टिकोण रखने के पक्षधर हैं, जो प्रजातांत्रिक विकास में सहयोग कर सकें। ऐसे दूरदर्शी अभिभाषण का प्रथम भाग हम सुधी पाठकों के लिए यहां प्रस्तुत कर रहे हैं :-

भारतीय इतिहास के इस निर्णयात्मक काल में संगठित होने वाले इस ऐतिहासिक सम्मेलन के अवसर पर पधारने वाले आप सब महानुभावों का मैं स्वागत करता हूँ। मैं भली प्रकार जानता हूँ कि इस समय सामने जो कार्य है वह कठिन है। हमारे सामने बहुत-सी बाधाएँ हैं जिनका हमें सामना करना है और एक प्रबल विरोध का सामना करना है। ऐसे अवसर पर महान ध्येय तथा स्पष्ट उद्देश्यों के प्रति, जिनको समक्ष रखकर जनसंघ देश की सेवा करना चाहता है, हमारा दृढ़ निश्चय ही एक तत्व है जो हम सबको एक सूत्र में बांध रहा है। मुझे विश्वास है कि यदि संगठित रूप में अदम्य साहस और उत्साह के साथ कार्य करेंगे और सत्यता से विचलित न होते हुए जनता जनार्दन की सेवा तथा अपनी मातृ-भूमि के मान एवं गौरव की वृद्धि के प्रमुख लक्ष्य को सदा अपने सम्मुख रखेंगे, तो निश्चय ही अन्त में विजय हमारी होगी।

मैं सर्वप्रथम यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि भारतीय जनसंघ की



स्थापना केवल आने वाले चुनावों को लड़ने के लिये नहीं की जा रहा है। निःसन्देह चुनावों का महत्व है और हम जहाँ भी सम्भव होगा उम्मीदवार खड़े करेंगे। निर्वाचन हमको अपनी विचारधारा को जनता तक पहुंचाने में और हमारे संगठन को अखिल भारतीय रूप देने में एक सुदृढ़ आधार पर खड़ा करने में सहायक होंगे।

चुनावों का परिणाम चाहे जो कुछ हों, हमारा संगठन उनके उपरान्त भी निरन्तर कार्यशील रहेगा और समाज के सभी वर्गों में आशा एवं सद्भावना का

सन्देश पहुंचाएगा और यह प्रयत्न करेगा कि वह अपने सत्प्रयत्नों द्वारा सुखमय और समृद्धशाली स्वतन्त्र भारत का पुनर्निर्माण करें।

हमको राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त किये चार वर्ष हो गये और सब इस बात से सहमत हैं कि हमारी अवस्था पहले से निरन्तर गिरती जा रही है। जनता के कष्ट बढ़ते जा रहे हैं। यदि आज की अवस्था पर हम निरपेक्ष दृष्टि से विचार करें तो हमको मानना पड़ेगा कि चाहे कुछ विश्व की घटनाएं भारत की आर्थिक गिरावट के लिये आंशिक रूप में उत्तरदायी हों किन्तु उसका मुख्य कारण, शासन द्वारा देश की समस्याओं को उचित रूप से सुलझाने के प्रयत्नों का अभाव ही है। आज सम्पूर्ण देश असन्तोष और निराशा के गहरे भावों में ग्रस्त है तथा जनता का विश्वास वर्तमान सरकार द्वारा शासन को सुचारू निष्पक्ष एवं योग्य रूप से चलाने की क्षमता से डिग गया है। चोर-बाजारी, नफाखोरी और भ्रष्टाचार ने हमारे समाज का घोर नैतिक पतन कर दिया है। इस राष्ट्रव्यापी अंसतोष के मूल कारणों की सच्ची मीमांसा करने और उनको जनता

के सहयोग से दूर करने की स्थापना पर सरकार आलोचनाओं के प्रति निरपवाद रूप से असहिष्णु रही है और प्रायः उसने स्वतंत्र जनमत की अभिव्यक्ति को दबाने का प्रयत्न किया है।

यह आश्चर्य की बात है कि चार वर्ष पूर्व जो कांग्रेस सम्पूर्ण समाज की सद्भावना लेकर चली थी आज उसने समाज के बहुमत की अन्तःप्रेरणा से प्राप्त होने वाला समर्थन खो दिया है और अपने को सत्तारूढ़ बनाए रखने के लिये उसे संदिग्ध साधनों को अपनाना पड़ रहा है। कांग्रेस शासन में तानाशाही की अभिव्यक्ति का मुख्य कारण देश में सुसंगठित विरोधी दलों का अभाव ही है जोकि बहुसंख्यक दल के ऊपर स्वस्थ नियन्त्रण रखते हुए देश में नई सरकार बनाने की क्षमता प्रकट कर सकते।

अतः भारतीय जनसंघ आज एक अखिल भारतीय राजनीतिक दल के रूप में आ रहा है जो कि प्रमुख विरोधी दल का कार्य करेगा। इसका यह अर्थ नहीं कि उसे बहुमत का विश्वास प्राप्त हुआ तो वह कहीं भी शासन की बागडोर लेने से हिचकिचाएगा किन्तु जहां ऐसा सम्भव न होगा वह शासन की विधान सभाओं के अन्दर और बाहर विरोध करता रहेगा। विरोध का अर्थ यह कदापि नहीं कि किसी भी उत्तरदायी सरकार के सम्मुख आने वाली समस्याओं के प्रति अविवेकपूर्ण और विनाशात्मक दृष्टि रखी जाये। अतः जहां हमको सरकारी व्यवस्थाओं और कानूनों की आलोचना करनी पड़ेगी हमारा उद्देश्य उनकी ओर एक रचनात्मक दृष्टिकोण से विचार करना ही होगा जिससे हम जनता को जागरूक रख सकें और देश में योग्य और सुदृढ़ शासन के प्रजातन्त्रीय पद्धति के विकास में विनम्र सहयोग दे सकें।

भारतीय जनसंघ आज एक अखिल भारतीय राजनीतिक दल के रूप में आ रहा है जो कि प्रमुख विरोधी दल का कार्य करेगा। इसका यह अर्थ नहीं कि उसे बहुमत का विश्वास प्राप्त हुआ तो वह कहीं भी शासन की बागडोर लेने से हिचकिचाएगा किन्तु जहां ऐसा सम्भव न होगा वह शासन की विधान सभाओं के अन्दर और बाहर विरोध करता रहेगा। विरोध का अर्थ यह कदापि नहीं कि किसी भी उत्तरदायी सरकार के सम्मुख आने वाली समस्याओं के प्रति अविवेकपूर्ण और विनाशात्मक दृष्टि रखी जाये। अतः जहां हमको सरकारी व्यवस्थाओं और कानूनों की आलोचना करनी पड़ेगी हमारा उद्देश्य उनकी ओर एक रचनात्मक दृष्टिकोण से विचार करना ही होगा जिससे हम जनता को जागरूक रख सकें और देश में योग्य और सुदृढ़ शासन के प्रजातन्त्रीय पद्धति के विकास में विनम्र सहयोग दे सकें।

जनसंघ का कार्यक्रम यहां पर एकत्रित प्रतिनिधियों के परामर्श से निश्चित होगा। फिर भी यह संगठन भारत के विभिन्न प्रदेशों में पिछले कई महीनों से कार्य कर रहा है और इसके कार्यक्रम की मुख्य धाराएं सबको ज्ञात हैं।

हमारे संगठन द्वारा भारत के सभी नागरिकों के लिये जाति, पंथ और सम्प्रदाय का विचार न करते हुए खुला है। जहां हम यह मानते हैं कि रीति

रिवाज, उपासना-पद्धति और भाषा के सम्बंध में भारत में विभिन्नता है वहां हम यह भी अनुभव करते हैं कि अपनी मातृभूमि के प्रति अमिट श्रद्धा और प्रेम की भावना से उत्पन्न पारस्परिक सद्भावना और बन्धुत्व के सूत्र में सम्पूर्ण समाज को अवरूद्ध होना चाहिए। आज सम्पूर्ण भारत विभिन्न जातियों, वर्गों एवं प्रांतीय भेद-भावों से उत्पन्न परस्पर विरोधी नारों का शिकार होकर विभक्त है। हमारा संगठन उस अनेकता में एकता का प्रयत्न करेगा जो भारतीय संस्कृति की सदा से विशेषता रही है। भारतीय राष्ट्र की नींव को सुदृढ़ और गहरी बनाने का कार्य सरल नहीं है।

यद्यपि यह भयावह है कि जाति और सम्प्रदायों के आधार पर राजनीतिक अल्पसंख्यक वर्गों की कल्पना को प्रोत्साहन दिया जाये तो भी स्पष्टतया भारत के विशाल बहुसंख्यक समाज का यह कर्त्तव्य है कि वह उन सब वर्गों को, जो कि राष्ट्र के प्रति सच्ची भक्ति रखते हैं, आश्वासन दे कि उनको कानून के अनुसार पूर्ण संरक्षण मिलेगा तथा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में उनके साथ समानता का व्यवहार होगा।

हमारा दल स्पष्टरूपेण यह आश्वासन देता है। हम यह भी मानते हैं कि भारतीय जनता में ऐसे भी बहुत लोग हैं जो आज पिछड़े हुए और दलित हैं, उनको पूर्ण अवसर मिलना चाहिए कि वे अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति उन्नत कर सकें तथा नवभारत के निर्माण में अपने अधिक सौभाग्यशाली बन्धुओं के साथ समान रूप से सहयोग दे सकें।

हमारा आदर्श

भारत के असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण

श्रद्धांजलि

को बनाए रखने की आतुरता में कांग्रेस ने मुस्लिम सन्तुष्टिकरण की नीति को जीवित रखा है, तथा उसके कुछ नेता विशेषकर हमारे प्रधानमंत्री हिन्दू भावनाओं को ठेस पहुंचाने में विशेष आनन्द लेते हैं। हम समझते हैं कि एक सच्चा हिन्दू, सिख, बौद्ध, ईसाई अथवा मुसलमान होते हुए भी प्रत्येक नागरिक राष्ट्रीय आदर्शों के प्रति श्रद्धा रखते हुए पक्का भारतीय हो सकता है। जनसंघ का दृढ़ विश्वास है कि भारत का भविष्य भारतीय संस्कृति और सम्यता का विकास स्वदेशीय और विदेशीय विचारधाराओं के पारस्परिक संघर्ष और समन्वय द्वारा ही हुआ है।

सहस्र वर्षों के इस महान इतिहास में साम्राज्यों एवं राजवंशों का उदय और अस्त हुआ और अनेकों महापुरुषों ने समय-समय पर भारतीय जीवन को गौरवान्वित किया है। भारत की सभी सच्ची संतान, चाहे वह हिन्दू, सिख, मुसलमान, ईसाई या बौद्ध कोई भी हो, उसे यह गर्व होना चाहिए कि युग युगान्तरों से चली आई हमारी परम्परा महान और समर्थ है, इसे नष्ट नहीं होने दिया जा सकता।

स्वतंत्र भारत का भविष्य भारतीय आदर्शों से सम्बद्ध जो कि आधुनिक एवं वैज्ञानिक युग की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए समय समय पर संबंधित एवं संशोधित हो सकते हैं, यह भाव हमारी राष्ट्रीय शिक्षा में प्रतिबिम्बित होना चाहिए। अतः धर्म-राज्य की स्थापना का उच्च आदर्श अपने सामने रखते हुए हम सम्पूर्ण समाज को एकता तथा बन्धुत्व के सूत्र में आबद्ध करने वाली भारतीय संस्कृति की सर्वोच्च परम्पराओं का ही पालन करते हैं।

क्रमशः...

पांचजन्य के पूर्व संपादक यादवराव देशमुख नहीं रहे

(27 मई 1928-6 जून 2015)

प्रख्यात पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता और पांचजन्य के पूर्व संपादक श्री यादवराव देशमुख का निधन 6 जून को गाजियाबाद के एक अस्पताल में हो गया। वह 87 वर्ष के थे। उन्होंने मृत्यु पश्चात् अपनी शरीर को दान देने का संकल्प लिया था। देहदान की राह पर चलने वाले श्री यादवराव देशमुख लोगों के लिए आदर्श बन गए। उनके परिजनों ने अंतिम संस्कार के लिए उनकी देह को श्मशान न ले जाकर मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज के हवाले कर उनकी उस इच्छा का सम्मान किया जिसमें उन्होंने अपनी देह का समाज के लिए दान करने का संकल्प लिया था। उल्लेखनीय है कि पिछले साल नवंबर में यहां मेवाड़ कॉलेज में आयोजित भारत विकास परिषद् के एक कार्यक्रम में उन्होंने अपनी देह के दान की घोषणा की थी। उन्होंने देहदान को मानवता के लिए आवश्यक करार देते हुए अपनी आंखों के भी दान का ऐलान किया था। 6 जून को देहावसान के बाद उनकी इच्छा के अनुसार मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज में दधीचि देहदान समिति की ओर से उनकी देह का दान कराया गया। संघ के प्रचारक रहने की वजह से उनके शव को अन्तिम दर्शन हेतु पं दीनदयाल शोध संस्थान में रखा गया। वहां बड़ी संख्या में संघ के पदाधिकारियों समेत सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। श्रद्धांजलि देने वालों में रा.स्व.संघ के सहस्रकार्यवाह



श्री वी भगैया, क्षेत्र प्रचारक श्री प्रेम कुमार, वरिष्ठ पत्रकार और पांचजन्य के पूर्व संपादक श्री देवेन्द्र स्वरूप, वरिष्ठ पत्रकार श्री अच्युतानंद मिश्रा, राष्ट्रधर्म के पूर्व संपादक श्री वीरेश्वर द्विवेदी, राजस्थान प्रदेश के पूर्व भाजपा अध्यक्ष डॉ. महेश चंद्र शर्मा आदि प्रमुख थे।

श्री यादवराव देशमुख का जन्म 27 मई 1928 को हुआ था। 1947 में उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वे वाराणसी, मिर्जापुर, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया और आजमगढ़ में प्रचारक रहे। उन्होंने पांचजन्य हिंदी साप्ताहिक का लखनऊ से 1958 से 1968 तक संपादन का कार्य किया। वे तरुण भारत और राष्ट्रधर्म के 1968 से 1975 तक प्रबंध संपादक रहे। वे युग विवेक के 1977 से 1980 तक संपादक रहे। आपातकाल के दौरान वे जेल गए। वे 1961 से 1970 तक अखिल भारतीय समाचार पत्र संपादक सम्मेलन के सदस्य रहे। उन्होंने मंथन का भी संपादन किया।■

उभरती शक्ति की झलक

✎ सुधांशु त्रिवेदी

सं युक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम 21 जून को संपन्न हो गया। उत्साहपूर्वक भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के तमाम देशों में इसे एक स्वास्थ्य संरक्षक पर्व के रूप में मनाया गया। गत वर्ष सितंबर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयास का ही यह परिणाम है जो आज वैश्विक परिदृश्य पर दिखा। योग को एक व्यायाम के रूप में देखा जा रहा है। वास्तविकता में योग एक बहुत व्यापक जीवन दर्शन है। योग का अर्थ जोड़ना होता है। यह शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों को एक साथ जोड़ने की प्रक्रिया से शुरू होकर हमारी शारीरिक ऊर्जा के साथ मन को जोड़ने, मन के साथ चेतना को जोड़ने और वहां से लेकर सार्वभौम चेतना अर्थात् ईश्वर तक जोड़ने का एक विराट जीवन दर्शन है। पतंजलि योगसूत्र में 195 सूत्र हैं जो कुल चार वर्ग समाधि, साधन, विभूति, कैवल्य में विभाजित हैं। योग के आठ अंगों यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान, समाधि में से आज जिसे हम योग के रूप में समझ रहे हैं वह उनमें से मात्र एक अंग 'आसन' है।

आसन के द्वारा शरीर की ऊर्जा और शक्ति को नियंत्रित किया जाता है परंतु योग सिर्फ एक शारीरिक व्यायाम से कहीं आगे बढ़कर यदि इसे पूर्ण रूप से समझें तो यह किसी भी कार्य को करने की कुशलता हममें उत्पन्न करता है। योग सिर्फ शरीर को ही बेहतर ऊर्जा नहीं देता, बल्कि हमारे मन और प्रवृत्ति का

निरोध करके हमारी चेतना को ही एक नई ऊर्जा देता है। इसीलिए योग का एक और प्रख्यात सूत्र है— 'योगाश्चित्तवृत्तिनिरोधः' अर्थात् हमारे मन, चित्त के भागने और भटकने की प्रवृत्ति का निरोध करने की क्षमता ही योग में है। इसका व्यायाम रूपी एक पक्ष जो शारीरिक ऊर्जा को नियंत्रित एवं संतुलित करता है उसके सकारात्मक परिणाम आज पूरा विश्व देख रहा है। विश्व के अनेक देशों और विश्वविद्यालयों में अनुसंधान के द्वारा भी कुछ तथ्य प्रतिपादित हुए हैं कि योग शारीरिक

योग भारत की उसी आकर्षक सौम्य शक्ति का प्रतीक है जो पिछले 50-60 सालों में पश्चिमी जगत में अनेकानेक प्रतिष्ठित योग गुरुओं के प्रति आकर्षण के रूप में निरंतर दिखाई पड़ती रही। संपूर्ण विश्व में सिंगापुर से दुबई, लंदन और न्यूयार्क तक एक साथ जो परिदृश्य दिखाई पड़ा शायद यह 21वीं सदी में भारत के उभरने वाले सकारात्मक एवं प्रेरक वैश्विक प्रभाव की एक झलक दिखला रहा था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने भारत की प्राचीन मेधा की अमूल्य निधि को अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर एक व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया है।

स्वास्थ्य, मानसिक तनाव, अवसाद से बचाव, मानसिक शांति प्रदान करने में सक्षम है। विश्व प्रसिद्ध अमेरिका के बोस्टन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ मेडिसिन द्वारा मई 2012 में प्रकाशित मेडिकल हाईपोथिसिस जर्नल में यह प्रतिपादित किया गया है कि लंबी बीमारी और दुर्घटना के बाद सामान्य होने के लिए तनाव मुक्त होने में योग बहुत प्रभावी भूमिका निभाता है क्योंकि इस शोध के अनुसार योग केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (सेंट्रल नर्वस सिस्टम) का आधार माने जाने वाली तंत्रिका वेगस नर्व को प्रचुर ऊर्जा प्रदान करता है। हावर्ड विश्वविद्यालय में प्रकाशित 'हावर्ड मेंटल हेल्थ लेटर' में यह पाया गया है कि उलझन और अवसाद और पीटीएसडी (पोस्ट ट्राॉमेटिक मेस डिसऑर्डर) से निपटने में योग सर्वाधिक सक्षम है।

योग पश्चिम से प्रेरित हमारी तथाकथित आधुनिक सोच के तीन आयामों को भी बदलता है। एक, पाश्चात्य सोच कहती है कि शरीर की समस्याओं का समाधान बाहर से ही मिल सकता है परंतु योग सिखाता है कि नहीं, यह समाधान मुख्यतः अंदर से होता है। दो, हम सुख शांति की प्राप्ति प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करके पा सकते हैं संघर्ष करके नहीं। तीन, स्वस्थ रहने के लिए रोग होने और फिर उसका समाधान करने की बजाय एक निश्चित शारीरिक और मानसिक व्यवस्था बनाकर रोग को आने से काफी हद तक बचा जा सकता है। योग एक ऐसा माध्यम है जो लगभग बिना धन के व्यक्ति को स्वास्थ्य प्रदान

कर सकता है। यह समाज के निर्धन तबके के लिए वरदान के समान है। अतः समाजवादियों और वामपंथियों को तो इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा करनी चाहिए। योग को जो लोग सांप्रदायिक कहना चाहते हैं वे शायद इन ऐतिहासिक तथ्यों को भूल जाते हैं कि आज से एक हजार साल पहले पतंजलि योग सूत्र का अरबी में अनुवाद अलबरूनी ने किया और इसकी पर्याप्त प्रशंसा की। इसी कालखंड में अरबी विद्वान अबू रेहान ने योग की विवेचना और प्रशंसा की। आज भी संयुक्त राष्ट्र में योग दिवस के प्रस्ताव को 177 देशों ने केवल समर्थन ही नहीं दिया, बल्कि वे सह-प्रायोजक भी हैं। संयुक्त राष्ट्र के इतिहास में किसी भी प्रस्ताव के आज तक इतने सह-प्रायोजक नहीं बने। विश्व के 56 मुस्लिम देशों में से 46 देश इसके सह-प्रायोजक बने, जिसमें इस्लामिक जगत की राजनीति में धुर विरोधी सऊदी अरब और ईरान दोनों शामिल हैं। फिर भी यदि कुछ लोग मजहबी आधार पर योग का विरोध करना चाहते हैं तो शायद वह अपने को अलबरूनी और अबू रेहान से बड़ आलिम और अरब-ईरान से बस इस्लाम का प्रतीक मानने की गलतफहमी के शिकार हैं। योग प्रकृति के रहस्यों से जुड़ा एक वैज्ञानिक सिद्धांत है जिसे मजहब से जोड़ना वैज्ञानिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक तीन दृष्टियों से गलत और दुर्भावना से प्रेरित है। परंतु इसके दूसरे पक्ष पर भी हमें बहुत सुरक्षात्मक होने की आवश्यकता नहीं है। यदि सारा विश्व आज न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत, आइंस्टीन का सापेक्षता का सिद्धांत, कैपलर का ग्रहों की गति का सिद्धांत और हाईजनवर्ग के अनिश्चितता

के सिद्धांत को उन्हीं के नामों के साथ जोड़ कर स्वीकार करता है तो क्यों नहीं हम सहज रूप से इसे भी स्वीकार करें कि योग भी वेदों के षट्दर्शन में से एक दर्शन का अंग है जिसे प्रकृति के रहस्यों से जुड़े उपरोक्त सिद्धांतों की तरह ही भारतीय योग सिद्धांत या वैदिक योग सिद्धांत की संज्ञा मिलनी चाहिए।

योग के लिए किसी भी व्यक्ति, संस्था या सरकार ने दबाव नहीं बनाया, बल्कि इसके लाभ देख कर विश्व भर में लोग स्वतः आकर्षित हुए। योग के प्रति यह विश्वव्यापी आकर्षण भारत की एक और शक्ति का प्रतीक है जो आपको दबाती नहीं, बल्कि प्रेरित करती है। हावर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जोजफनाय ने इसे 'सॉफ्ट पावर' या

सौम्य शक्ति कहा है। योग भारत की उसी आकर्षक सौम्य शक्ति का प्रतीक है जो पिछले 50-60 सालों में पश्चिमी जगत में अनेकानेक प्रतिष्ठित योग गुरुओं के प्रति आकर्षण के रूप में निरंतर दिखाई पड़ती रही। संपूर्ण विश्व में सिंगापुर से दुबई, लंदन और न्यूयार्क तक एक साथ जो परिदृश्य दिखाई पड़ा शायद यह 21वीं सदी में भारत के उभरने वाले सकारात्मक एवं प्रेरक वैश्विक प्रभाव की एक झलक दिखला रहा था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने भारत की प्राचीन मेधा की अमूल्य निधि को अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर एक व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया है।■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हैं)

(साभार- दै. जागरण)

पृष्ठ 14 का शेष...

वसुधैव कुटुम्बकम् की परिकल्पना को साकार करेंगे।

उन्होंने सभी के स्वास्थ्य और शांति की कामना करते हुए कहा,

सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया।

सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मा कश्चित् दुःख भागभवेत् ।।

(सब खुश रहें, सब निरोग रहें। सब शुभ देखें, कोई पीड़ा न झेले।)

प्रधानमंत्री ने प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दस रुपये और सौ रुपये के स्मारक सिक्के जारी किए और पांच रुपये का डाक टिकट भी जारी किया। इस अवसर पर आयुष राज्यमंत्री श्री श्रीपद नाइक ने कहा कि योग मानव मात्र को इस देश के महानतम उपहारों में से एक है। संभवतः यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्यों में से 177 देशों ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करने के प्रस्ताव का न केवल समर्थन किया, बल्कि इसे सह-प्रायोजित भी किया था।

उन्होंने कहा कि योग का स्वास्थ्य संबंधी पहलू सर्वाधिक महत्वपूर्ण बन गया है और आधुनिक चिकित्सा पद्धति भी इसका महत्व समझने लगी है। योग का इस्तेमाल बीमारियों की रोकथाम के लिए किया जा रहा है। आज स्वास्थ्य क्षेत्र के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती गैर-संचारी रोगों का बोझ कम करने की है। परम्परागत चिकित्सा में संचारी रोगों की समस्या का स्थायी या लागत की दृष्टि से किफायती समाधान उपलब्ध नहीं है। अनेक लोगों का मानना है कि योग इन रोगों की रोकथाम और नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है।■

बिहार की राजनीति और चुनाव की आहट

✎ संजीव कुमार सिन्हा

मुझे नहीं पता था कि नीतीश बबूल का पेड़ निकलेंगे। अगर मुझे पता होता कि ऐसा निकलेगा तो उसी वक्त गर्म पानी से उसे जला देता।” 20 अप्रैल 2014 को खगड़िया जिले में हुई एक रैली में लालू यादव ने नीतीश कुमार पर प्रहार करते हुए कहा।

तो नीतीश कुमार ने फेसबुक पर इसका जवाब दिया, “लालू प्रसाद का पॉलिटिकल कैरिअर ही बिहार की बर्बादी का घोषणापत्र है। 15 साल तक सत्ता में रहे लालू प्रसाद ने बिहार को बर्बाद और बदनाम किया।”

उपरोक्त बयान तो नमूना भर है। वास्तव में तो ऐसी कटुक्तियों की भरमार है।

दुनिया जानती है कि नीतीश और लालू एक-दूसरे के धुर-विरोधी थे। एक-दूसरे के खिलाफ ताल ठोकते नजर आते थे। एक-दूसरे को बिहार की बर्बादी का कारण बताते थे। दोनों के मन में एक-दूसरे के प्रति बेहद आक्रोश था।

यही कारण रहा कि हाल ही में जब नीतीश कुमार की बिहार के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के नाते घोषणा हो रही थी तो लालू प्रसाद के मन की टीस उबल ही पड़ी। उन्होंने नीतीश कुमार को जहर बता दिया और कहा कि वह भाजपा को रोकने के लिए हर जहर पीने को तैयार हैं।

आखिए ऐसा क्या हुआ कि दोनों करीब हो गए?

दरअसल, बिहार में भाजपा बढ़ रही है। 95 लाख लोग

भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर चुके हैं। भाजपा की बढ़ती ताकत से लालू-नीतीश के होश उड़ गए हैं। लोकसभा चुनाव

विधानसभा चुनावों में दलगत स्थिति

(कुल 243 सीट)

वर्ष	जद(यू)	भाजपा	राजद	कांग्रेस	लोजपा	अन्य
2005	88	55	54	9	10	27
2010	115	91	22	4	3	8

में वे अपना हथ्र देख चुके हैं, इसलिए इस बार गलबहियां कर ली है। हाल ही में अनेक राज्यों में भाजपा विधानसभा चुनावों में परचम लहरा चुकी है।

गौरतलब है कि गत सत्रह वर्षों से भाजपा और जदयू का गठबंधन था। 2005 में इस गठबंधन ने लालू प्रसाद के पंद्रह सालों के जंगलराज से प्रदेश को मुक्त कराया। तबसे नीतीश कुमार मुख्यमंत्री रहे। उनके मन में इसका अहंकार गहराने लगा। वे सपना देखने लगे कि राज्य में लोकसभा की सर्वाधिक सीटें जीतकर वे प्रधानमंत्री के दावेदार बन सकते हैं।

2013 में भाजपा ने श्री नरेंद्र मोदी को चुनाव प्रचार अभियान समिति का अध्यक्ष घोषित किया। इसको मुद्दा बनाकर जदयू ने भाजपा से नाता तोड़ लिया।

2014 में लोकसभा चुनाव हुए। पूरे देश में मोदी लहर चली। कश्मीर से कन्याकुमारी तक। बिहार में भी भाजपानीत राजग को 40 में से 31 सीटें मिलीं। लालू यादव की पार्टी राजद को चार तो नीतीश की पार्टी जद(यू) को सिर्फ दो सीटों से संतोष करना पड़ा। इस करारी हार के पश्चात् नीतीश कुमार ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया और जीतनराम माझी को मुख्यमंत्री बनाया। नीतीश कुमार ने सोचा कि माझी सीधे-सादे हैं, जैसा मैं कहूंगा-वैसा करेंगे। लेकिन माझी ने रिमोट-कंट्रोल से चलना स्वीकार नहीं किया। वे एक के बाद एक फैंसले लेते रहे। इससे नीतीश तिलमिला उठे। फिर माझी को मुख्यमंत्री पद से हटाकर स्वयं इस पद पर आसीन हो गए। मांझी अब जद(यू) से बाहर हैं और उन्होंने अपने समर्थकों के साथ एक नयी पार्टी - हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (हम) बना ली है। वहीं राजद के एक सांसद पप्पू यादव

फिर से बिहार को जातिवाद और अल्पसंख्यकवाद के दलदल में धकेलने का षड्यंत्र हो रहा है। लालू जंगलराज के पर्याय हैं और सत्ता की खातिर नीतीश अब उन्ही की गोद में जाकर बैठ गए हैं। सूबे की जनता सब जानती है। पिछली बार भी उसने जातिवादी राजनीति को शिकरस्त देकर विकास की राजनीति का साथ दिया था। इस बार फिर जातिवाद और विकास के बीच चुनाव होने हैं। बिहार के लोगों को सुशासन चाहिए, युवाओं को रोजगार चाहिए, वे बदलाव चाहते हैं।

ने भी लालू यादव के खिलाफ मोर्चा खोल दिया और 'जन अधिकार पार्टी' बना ली।

लोकसभा चुनाव में जद(यू)-राजद भाजपा के हाथों बुरी तरह परास्त चुके हैं। अब इसी वर्ष सितंबर-अक्टूबर महीने में विधानसभा चुनाव होने हैं क्योंकि मौजूदा 15वीं विधानसभा का कार्यकाल 29 नवंबर 2015 को खत्म हो रहा है।

बिहार में राजनीति गरमाने लगी है। कुछ समय पहले जोर-शोर से अभियान चला कि जनता परिवार के घटकों का एक दल में विलय होगा। लेकिन यह खिचड़ी पक न सकी। अब बिहार में जद(यू), राजद, कांग्रेस और राकांपा ने मिलकर विधानसभा चुनाव लड़ना तय किया है। वहीं दूसरी ओर, राजग गठबंधन में भाजपा, लोजपा और रालोसपा शामिल है। पिछले दिनों जीतनराम माझी भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह से मिले और कहा कि वे एनडीए के साथ मिलकर बिहार में चुनाव लड़ेंगे और भाजपा के साथ मिलकर नीतीश को हराएंगे।

जद(यू)-नीत गठबंधन जहां जातिवाद के सहारे और सांप्रदायिकता का भय उत्पन्न कर अल्पसंख्यकों का वोट हथियाकर विधानसभा का चुनाव जीतना चाहता है वहीं भाजपा-नीत राजग विकास को मुद्दा बनाकर चुनाव मैदान में उतरनेवाली है।

नीतीश से यह सवाल पूछा जाना चाहिए कि गत डेढ़ दशक से अधिक समय वे भाजपा के साथ थे तब भाजपा सांप्रदायिक नहीं थी और अब अचानक से कैसे सांप्रदायिक हो गई है?

भाजपा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्ववाले राजग सरकार की उपलब्धियों को लेकर भी जनता के बीच जा रही है। पार्टी गत एक वर्ष में केंद्र में भ्रष्टाचारमुक्त सरकार, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर छवि और निरंतर मजबूत होती अर्थव्यवस्था को अच्छे दिनों का द्योतक बता रही है।

फिर से बिहार को जातिवाद और अल्पसंख्यकवाद के दलदल में धकेलने का षड्यंत्र हो रहा है। लालू जंगलराज के पर्याय हैं और सत्ता की खातिर नीतीश अब उन्ही की गोद में जाकर बैठ गए हैं।

सूबे की जनता सब जानती है। पिछली बार भी उसने जातिवादी राजनीति को शिकस्त देकर विकास की राजनीति का साथ दिया था। इस बार फिर जातिवाद और विकास के बीच चुनाव होने हैं। बिहार के लोगों को सुशासन चाहिए, युवाओं को रोजगार चाहिए, वे बदलाव चाहते हैं। ■

भाजपा नेता बोले-

नीतीश कुमार बिहार में जंगलराज लाना चाहते हैं। नीतीश और लालू प्रसाद दोनों मिलकर भी भाजपा को नहीं रोक सकते। दोनों का वजूद शून्य से अधिक नहीं है। दो शून्य मिलकर शक्ति नहीं हो सकते, शून्य ही रहेंगे।



- अमित शाह

राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

गठबंधन दूध में चीनी मिलने जैसा होना चाहिए और लालू-नीतीश का गठबंधन दूध में नींबू मिलने जैसा है।



- भूपेंद्र यादव

प्रभारी, बिहार प्रदेश भाजपा

सोनिया गांधी ने मनमोहन सिंह को कठपुतली के तौर पर इस्तेमाल कर पूरे देश को बर्बाद किया, उसी तरह लालू नीतीश को इस्तेमाल कर बिहार को बर्बाद करेंगे।



- मंगल पांडेय

अध्यक्ष, बिहार प्रदेश भाजपा

जद(यू)-राजद 'सांपनाथ' और 'नागनाथ' की जोड़ी है। इस 'जहरीले' गठबंधन को बेअसर करने का मंत्र सिर्फ भाजपा के नेतृत्ववाले गठबंधन के पास है।



- सुशील कुमार मोदी

नेता प्रतिपक्ष, बिहार विधान परिषद्

लालू प्रसाद और नीतीश कुमार को बिहार की जनता पहचानती है और बिहार के लोग फिर 'जंगलराज' की वापसी नहीं चाहते।



- नंदकिशोर यादव

नेता प्रतिपक्ष, बिहार विधानसभा

बेहतर होती अर्थव्यवस्था

✎ राम नयन सिंह

इस समय भारत की विकास दर चीन को पछाड़ते हुए विश्व में सर्वाधिक है। विश्व बैंक जैसे जाने-माने कई अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों का आकलन है कि आने वाले वर्षों में भारत की विकास दर 8 फीसदी हो सकती है। खुद वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली का आकलन है कि देश की विकास दर दहाई अंक में पहुंच सकती है। पिछले एक साल के दौरान मुद्रास्फीति नियंत्रण में रही है। यही नहीं, आज मुद्रास्फीति की स्थिति पिछले एक दशक में काफी बेहतर है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के सक्षम व कुशल प्रबंधन के चलते भारत की अर्थव्यवस्था में निरंतर सुधार हो रहा है। मई 2014 में जब भाजपानीत राजग सरकार ने सत्ता संभाली तो देश की विकास दर 5 प्रतिशत से भी नीचे थी। महंगाई लगातार दो अंकों में बनी हुई थी। घरेलू व विदेशी निवेश लगभग ठप्प था। यूपीए सरकार भ्रष्टाचार में आंकठ डूबी हुई थी। देश को लाखों-करोड़ों रुपये की चपत लग चुकी थी। भारत की अर्थव्यवस्था के प्रति वैश्विक नजरिया नकारात्मक था। ऐसे निराशा के माहौल में मोदी सरकार ने देश की बागडोर संभाली। सिर्फ एक वर्ष के भीतर ही देश में कई सकारात्मक परिवर्तन हुए। अच्छे दिन आने लगे। अर्थव्यवस्था में संप्रग सरकार के दौरान जो निराशा थी उससे पिछले एक साल से देश में नया उत्साह जगा है। मोदी सरकार द्वारा तेजी से निर्णय लिए जा रहे हैं। निकट भविष्य में देश तेज गति से प्रगति करेगा। पिछले एक साल में दुनिया की नजर में भारत के नेतृत्व और यहां की जनता की छवि सुधरी है। भाजपानीत राजग सरकार भ्रष्टाचार मुक्त

रही। देश की अर्थव्यवस्था में काफी सुधार हुआ। पिछले वित्त वर्ष के दौरान सकल घरेलू उत्पाद में 7.3 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई। विनिर्माण क्षेत्र ने सात प्रतिशत से अधिक वृद्धि दर्ज की है जिससे स्पष्ट होता है कि उद्योग सुधार के रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं। सेवा और विनिर्माण क्षेत्रों ने वृद्धि दर्ज की है जिससे रोजगार के अतिरिक्त अवसर पैदा होंगे।

मार्च तिमाही में चीन को पछाड़ कर भारत विश्व की सबसे तीव्र गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बन चुका है। भविष्य में भी भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर चीन से अधिक रहने की उम्मीद है और ऐसी स्थिति में अंतरराष्ट्रीय निवेशक भारत का रुख करेंगे। विनिर्माण क्षेत्र में बेहतरी के चलते पिछली मई में देश के अप्रत्यक्ष कर संग्रह में 37.3 फीसदी की शानदार बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है। उल्लेखनीय है अप्रत्यक्ष कर में बढ़ोत्तरी देश की अर्थव्यवस्था के लिए अच्छे संकेत हैं। बिजली उत्पादन में काफी सुधार हुआ है। यूपीए सरकार के समय बिजली उत्पादक संयंत्र जो कोयले की कमी से जूझ रहे थे, उनके पास अब पर्याप्त कोयला उपलब्ध है। ऊर्जा संयंत्रों

पर पहली बार दो-दो माह के लिए कोयला का भंडारण किया गया है। यही नहीं, एक साल में पावर एक्सचेंज पर बिजली की दरें घटकर आधा रह गई हैं। इससे देश की अर्थव्यवस्था को काफी बल मिलेगा।

केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ) के हालिया आंकड़ों के अनुसार विनिर्माण क्षेत्र में 2014-15 में सकल मूल्य वर्धन में 7.1 प्रतिशत वृद्धि रही जो पिछले वर्ष 5.3 प्रतिशत थी। इसी प्रकार बिजली, गैस, जलापूर्ति और अन्य सार्वजनिक सेवाओं में 7.9 प्रतिशत वृद्धि रही। एक साल पहले इनमें 4.8 प्रतिशत वृद्धि हुई थी। निर्माण गतिविधियों में वर्ष के दौरान 4.8 प्रतिशत वृद्धि रही। इससे पिछले वर्ष इस क्षेत्र में 2.5 प्रतिशत वृद्धि हुई थी। वित्त, रीयल एस्टेट और पेशेवर सेवाओं के क्षेत्र में 11.5 प्रतिशत वृद्धि रही। इन क्षेत्रों में 2013-14 में 7.9 प्रतिशत वृद्धि हुई थी। गौरतलब है कि कृषि में और वृद्धि दर्ज हो सकती है हालांकि खराब मौसम के कारण इस क्षेत्र में ज्यादा प्रगति नहीं हो सकी। पिछले वर्ष मानसून यदि अच्छा होता तो आर्थिक वृद्धि और अच्छी होती। इसके साथ ही वर्ष 2014-15 के

दौरान वर्तमान मूल्य पर प्रति व्यक्ति आय 9.2 प्रतिशत बढ़कर 87,748 रुपए हो गई। इससे पिछले वर्ष यह 80,388 रुपए थी। वर्ष 2011-12 में यह 64,316 रुपए और 2012-13 में 71,593 रुपए थी।

व्यापार घाटा और चालू खाता के घाटे में कमी

कच्चे तेल की कीमतों में कमी तथा विदेशी पूंजी का प्रवाह बढ़ने से व्यापार घाटा कम हुआ है, जिससे चालू खाते का घाटा (कैड) भी नीचे आया है। पूरे वित्त वर्ष 2014-15 में चालू खाते का घाटा घटकर जीडीपी का 1.3 प्रतिशत रहा है। वित्त वर्ष 2014-15 में व्यापार घाटा कम होकर 144.2 अरब डालर पर आ गया। इससे पिछले वित्त वर्ष में यह 147.6 अरब डालर रहा था। पूरे वित्त वर्ष (2014-15) के लिए चालू खाते का घाटा घटकर 27.5 अरब डालर या जीडीपी का 1.3 प्रतिशत रहा। इससे पिछले वित्त वर्ष में कैड 32.4 अरब डालर या जीडीपी का 1.7 फीसदी था। रिजर्व बैंक ने कहा कि कैड चौथी तिमाही में 1.3 अरब डालर या जीडीपी का 0.2 प्रतिशत रहा है। तीसरी तिमाही में कैड 8.3 प्रतिशत या जीडीपी का 1.6 प्रतिशत था।

भुगतान संतुलन की स्थिति पर रिजर्व बैंक की रिपोर्ट में कहा गया है, 'चौथी तिमाही में कैड में कमी मुख्य रूप से व्यापार घाटा कम होने से आई है। केंद्रीय बैंक ने कहा कि व्यापार घाटा कम होने और शुद्ध अदृश्य मदों से आमदनी के अलावा शुद्ध वित्तीय प्रवाह में उल्लेखनीय सुधार से कैड कम हुआ और विदेशी मुद्रा भंडार में बड़ा इजाफा हुआ। घरेलू रेटिंग एजेंसी केयर रेटिंग्स ने चालू वित्त वर्ष में चालू खाते का घाटा

जीडीपी का डेढ़ से दो फीसदी रहने का अनुमान लगाया है।

मार्च, 2015 के अंत में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 341.6 अरब डालर पर था। रिजर्व बैंक के अनुसार पिछले वित्त वर्ष के दौरान विदेशी मुद्रा भंडार में 61.4 अरब डालर का बड़ा इजाफा हुआ जबकि इससे पिछले वित्त वर्ष में विदेशी मुद्रा भंडार 15.5 अरब डालर बढ़ा था।

महंगाई पर प्रभावी नियंत्रण

देश की थोक महंगाई दर लगातार नकारात्मक बनी हुई है, हालांकि यह खाद्य कीमतें बढ़ने के कारण थोड़ा बढ़कर मई में नकारात्मक 2.36 फीसदी रही, जो अप्रैल में नकारात्मक 2.65 थी। थोक मूल्य सूचकांक के आधार पर मापी जाने वाली महंगाई दर मई 2014 में 6.18 फीसदी थी। खाद्य महंगाई दर 3.8 फीसदी रही। आलू इस दौरान 51.95 फीसदी सस्ता हो गया।

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़े के अनुसार ईंधन इस दौरान 10.41 फीसदी सस्ता हो गया। रसोई गैस 5.18 फीसदी, पेट्रोल 11.29 फीसदी और डीजल 11.62 फीसदी सस्ता हुआ। विनिर्मित वस्तुओं की कीमत 0.64 फीसदी घट गई। प्राथमिक वस्तुओं की कीमत में 0.77 फीसदी गिरावट रही।

उल्लेखनीय है कि थोक महंगाई दर अक्टूबर 2014 में 1.66 फीसदी, नवंबर में नकारात्मक 0.17 फीसदी, और उसके बाद क्रमशः नकारात्मक 0.5 फीसदी, नकारात्मक 0.95 फीसदी, नकारात्मक 2.06 फीसदी, नकारात्मक 2.33 फीसदी और नकारात्मक 2.65 फीसदी रही।

यूपीए सरकार के दौरान खुदरा

मुद्रास्फीति जो लगातार दहाई अंकों में बनी हुई थी, वह अब घटकर आधी से भी कम 5 प्रतिशत के आसपास रह गई है। पिछली मई महीने में खुदरा मुद्रास्फीति 5.01 प्रतिशत थी। इस माह के दौरान फल एवं सब्जियों के दाम में कमी आयी। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति इस साल अप्रैल में 4.87 प्रतिशत थी। पिछले वर्ष मई में 8.33 प्रतिशत थी। फल एवं सब्जियों की मुद्रास्फीति मई, 2015 में क्रमशः 3.84 प्रतिशत तथा 4.64 प्रतिशत थी।

खुदरा मुद्रास्फीति में नरमी के रुख को देखते हुए इस साल अब तक रिजर्व बैंक रेपो रेट में तीन बार 25 बेसिस प्वाइंट की दर से कुल 75 प्वाइंट रेट कट हो चुका है। इससे बैंको द्वारा प्राप्त कर्ज सस्ते होंगे जिससे देश की अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी। बैंकों के एनपीए (नॉन परफार्मिंग एसेट्स) में सुधार आया है। राजकोषीय घाटे की स्थिति में काफी सुधार हुआ है, जिससे सरकार आधारभूत संरचनाओं आदि में काफी पैसा लगा सकती है और देश की अर्थव्यवस्था तीव्र गति से प्रगति करेगी।

इन शुभ संकेतों के अलावा पिछले दिनों देश में अच्छी बारिश हुई है। हालांकि मौसम विभाग ने देश में सूखे पड़ने की आशंका व्यक्त की है। देश में अभी तक औसत से सात से आठ फीसद अधिक बारिश हुई है। इससे फसलों की बुआई में मदद मिलेगी और जलाशयों के जल स्तर में भी बढ़ोतरी होगी। यदि ऐसी ही वर्षा होती रही तो कृषि-उत्पादन में आशातीत वृद्धि होगी, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था के साथ-साथ देश की समग्र अर्थव्यवस्था को बल मिलेगा। ■

प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश के गन्ना किसानों से मुलाकात की

किसानों के आत्मनिर्भरता एवं समृद्धि की दिशा में सरकार काम करेगी : मोदी

प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि केंद्र सरकार किसानों को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने के एक सपने को सच में बदलने की दिशा में काम कर रही है। उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से लगभग 150 किसानों के एक प्रतिनिधिमंडल को संबोधित

~~~~~●●●~~~~~

किसानों ने 18 जून को प्रधानमंत्री से उनके निवास स्थान पर मुलाकात की और हाल ही में गन्ना किसानों को 6000 करोड़ के आर्थिक मदद दिए जाने के निर्णय और चीनी सेक्टर में सरकार द्वारा किसानों के हित में उठाये गये कदमों पर उन्हें धन्यवाद ज्ञापित किया।

~~~~~●●●~~~~~

करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार ने इस विजन के लिए कई कदम उठाए हैं। किसानों ने 18 जून को प्रधानमंत्री से उनके निवास स्थान पर मुलाकात की और हाल ही में गन्ना किसानों को 6000 करोड़ के आर्थिक मदद दिए जाने के निर्णय और चीनी सेक्टर में सरकार द्वारा किसानों के हित में उठाये गये कदमों पर उन्हें धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रधानमंत्री ने विस्तार में बताते हुये कहा कि किस तरह उनकी सरकार सभी गांवों को 24x7 बिजली प्रदान करने के लिए काम कर रही है, किस तरह यह लोगों के जीवन में बदलाव

लागा और उन्हें उनके फसलों के मूल्य संवर्धन के लिए एक अवसर प्रदान करेगा।

प्रधानमंत्री ने कि देश में प्रत्येक किसान को मृदा स्वास्थ्य कार्ड उपलब्ध कराने के सरकार के फैसले से किसानों

सरकार के इथेनॉल का समर्थन मूल्य तय करने के फैसले और इथेनॉल सम्मिश्रण से गन्ना किसानों की किस तरह से मदद होगी।

प्रधानमंत्री ने किसानों के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त की जिन्होंने उनसे



को फसल के उत्पादन लागत कम करने में मदद मिलेगी और इससे उत्पादकता में सुधार होगा। इसी तरह, माइक्रो इरीगेशन भी किसानों को प्रति बूँद अधिक फसल उत्पादन में मदद मिलेगी।

श्री नरेन्द्र मोदी ने उनकी सरकार द्वारा शुरू की गई वित्तीय समावेशन और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से होने वाले लाभों को समझाया। उन्होंने कहा कि लाभ का सीधा हस्तांतरण सिस्टम से लीकेज और बिचौलियों को खत्म करेगा। इसलिए पूरी वित्तीय सहायता जो किसानों के लिए मंजूर की गयी है, का सीधा लाभ किसानों को मिलेगा।

प्रधानमंत्री ने यह भी बताया कि

मिलकर देश की प्रगति और काम करने लिए उन्हें आशीर्वाद दिया है।

इससे पहले किसानों ने सरकार द्वारा हाल में किसानों के हित में उठाये गये कदमों के लिए प्रधानमंत्री को बधाई देते हुये उनका आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर किसानों की ओर से श्री विजयपाल तोमर, चौधरी उधम सिंह और श्री हरेन्द्र सिंह ने अपनी बात रखी।

भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह, कृषि राज्य मंत्री श्री संजीव बालियान, उत्तर प्रदेश राज्य भाजपा अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीकांत बाजपेयी और भाजपा - उत्तर प्रदेश संगठन मंत्री श्री सुनील बंसल इस अवसर पर उपस्थित थे। ■